जैन तीर्थवंदना

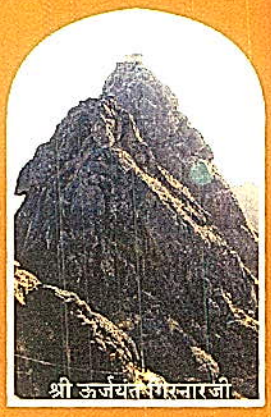

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी का मुखपत्र

वीर निर्वाण संवत् 2544

VOLUME : 9 ISSUE : 1 MUMBAI, JULY 2018 PAGES : 40 PRICE : ₹25

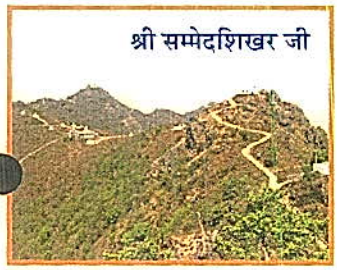

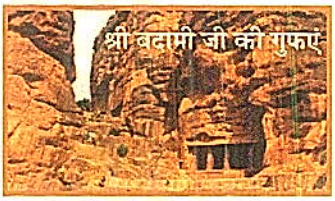

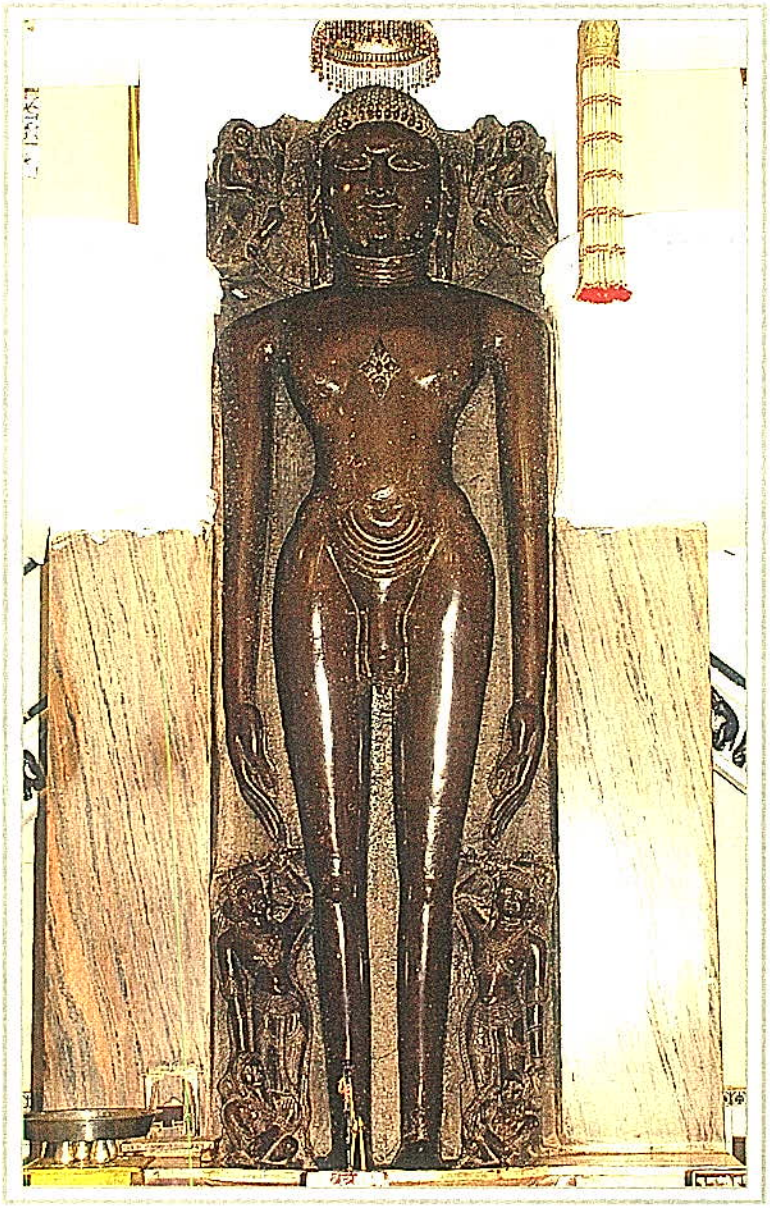

तीर्थंकर श्री 1008 शांतिनाथ भगवान
बहोरीबंद, जिला जबलपुर-मध्यप्रदेश

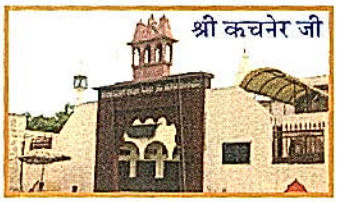

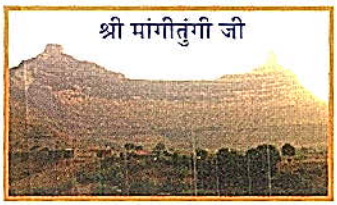

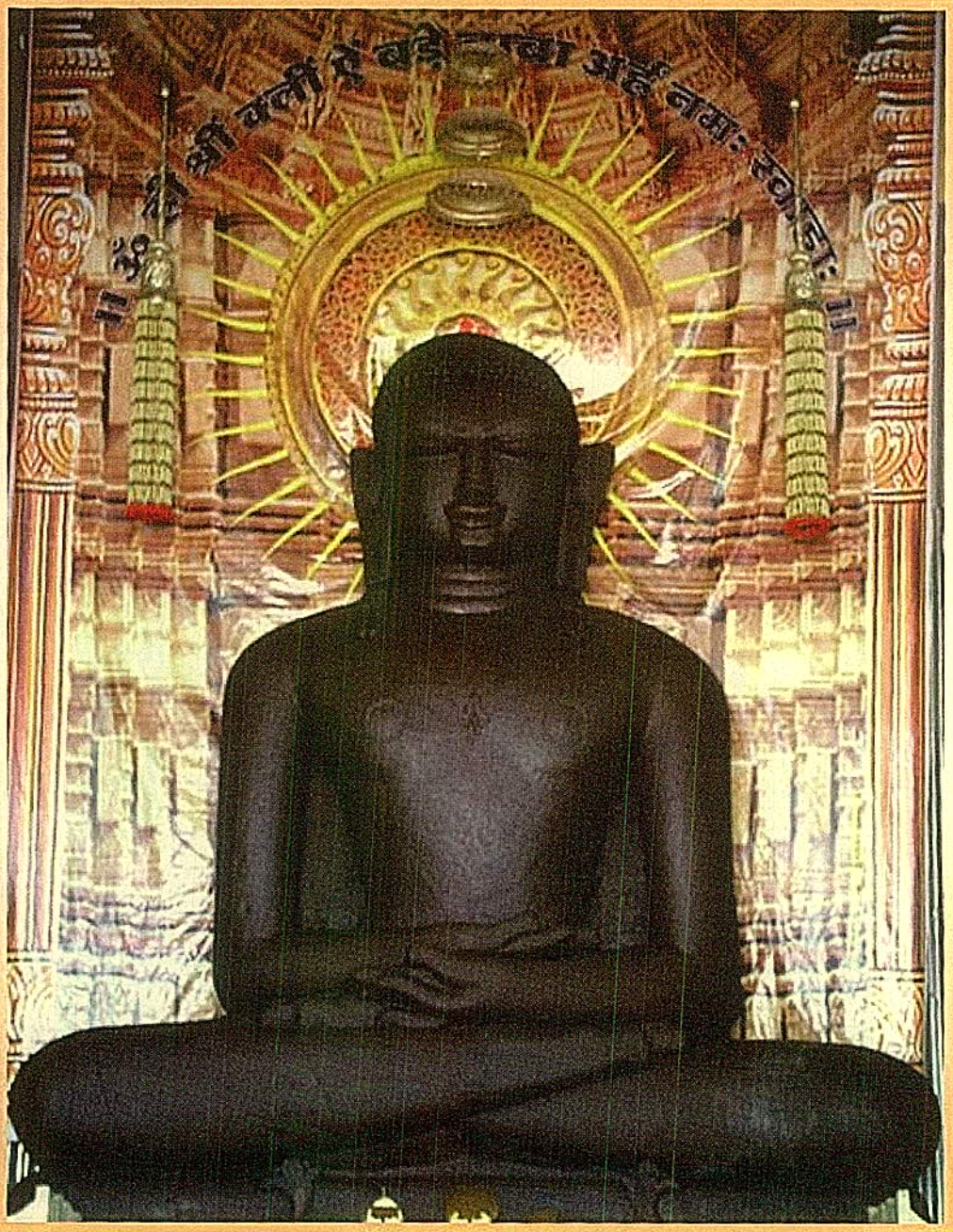

पतित पावन तरण तारण, हमारी फरियाद सुन लेना।
तेरे चरणों में मस्तक है, हमें अपना बना लेना।।

R.K. MARBLE GROUP

Corporate Office : Makrana Road, Madanganj-Kishangarh, Dist.Ajmer(Raj.)-305801
Tel : +91 1463 260101-10, Fax : +91 1463 250601
E-mail : info@rkmarble.com, Website : www.rkmarble.com

चातुर्मास में आध्यात्मिक चतुराई प्राप्त करें

हम सबके जीवन का प्रत्येक पल पर्व है। इस पल को हम उत्साह से मना लें तो अच्छा है वरना जीवन तो पल-पल समाप्त हो ही रहा है। जैसे कपड़ा प्रतिपल कमजोर होता है पर हमें दिखाई नहीं देता, वैसे ही यह नश्वर जीवन क्षण-क्षण समाप्त होता जा रहा है, पता ही नहीं चलता।

हम सबके जीवन में कितने ही अवसर आए, चले गए, कितने ही साधु आए, चले गए, लेकिन हमने लाभ लिया या नहीं लिया हमें नहीं मालूम है। यह पत्रिका जब आपके हाथों में होगी तब तक भारतवर्ष के अनेक ग्राम-नगरों में चातुर्मास स्थापना हो रही होगी या होने वाली होगी।

वर्षायोग या चातुर्मास लगभग दोनों ही समान है। चातुर्मास मेरी दृष्टि में चतुर बनने का समय है, क्योंकि इस दौरान हम अपने गुरूओं के सान्निध्य में बुराईयों से मुक्त हो सकते हैं। संत कहते हैं कि ऐसी कोई लत नहीं है जिससे मनुष्य मुक्त न हो सके, लेकिन तय तो हमें स्वयं को करना होता है। यदि परिवर्तन चाहे तो एक पल में घटित हो जाता है अन्यथा लाखों कोशिश क्या कई वर्ष समाप्त हो जाएं परिवर्तन नहीं हो पाता है। इसका सबसे बड़ा सूत्र है - दृढ़संकल्प। संकल्प के बल पर ही हम अपना जीवन ऊँचा बना सकते हैं।

पूज्य जगद्गुरू कर्मयोगी स्वस्तिश्री चारूकीर्तिजी भट्टारक स्वामीजी का दृढ़ संकल्प था कि दिगम्बरत्व की कीर्ति सम्पूर्ण विश्व में स्थापित होनी चाहिये। हम सबने देखा, महामहिम राष्ट्रपतिजी, माननीय प्रधानमंत्रीजी सहित विदेशों के अनेकों

लोगों ने गोम्मटेश्वर को नमन किया। संकल्प में सहभागी सम्पूर्ण दिगम्बर जैन समाज के साथ राष्ट्रगौरव, वात्सल्य वारिधि आचार्यश्री वर्धमानसागरजी महाराज के सान्निध्य में ३८० से अधिक संत जुट गए और उनकी ऊर्जा व तपस्या के प्रभाव से हम सब धन्य हो गए। अधिकांश संत समुदाय पद विहार करते हुए देशभर में विभिन्न स्थानों पर पहुँच रहे हैं जहाँ चातुर्मास स्थापित होना है, आईये! हम उनके चातुर्मास में संकल्प ग्रहण करें कि स्वयं की आध्यात्मिक उन्नति के साथ सामाजिक उन्नति, एकजुटता पर ध्यान देंगे।

१. चातुर्मास में धन संग्रह नहीं धर्म के संग्रहण पर जोर दें।
२. चातुर्मास में चार कषायों क्रोध-मान-माया-लोभ को क्रमशः कम करते हुए आगे बढ़ेंगे।
३. चातुर्मास में सामाजिक समरसता के लिए समय निकालेंगे।

४. चातुर्मास में समाज को जोडेगें।

५. दिगम्बर साधु के प्रति विनय, वैय्यावृत्ति का भाव रखेगें।

६. असफलता, निराशा, सप्तभय, कुंठा, ईर्ष्या, शंका, अपेक्षाएँ, आकांक्षाएँ, यश, अपयश, मोह, ममकार आदि की चिंता छोड़ेंगे। क्योंकि चिंता चिता का कारण बनती है।

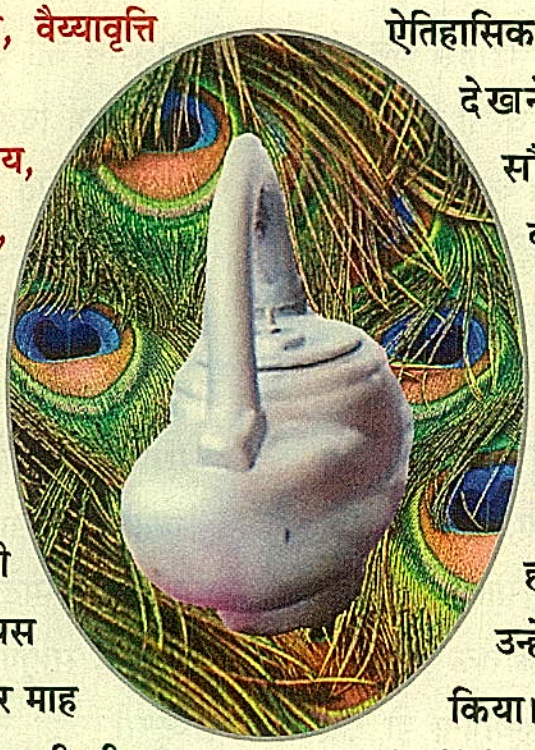

विगत माह में मैंने आपसे बात की थी कि 'हम भेद मतों के समझे पर आपस में कोई मतभेद, मनभेद न हो।' चार माह में अनेक अवसर आते है जब हम अपनी सीमा का उल्लंघन कर देते है जिससे समाज में परेशानी खड़ी हो जाती है।

हमेशा आनंद में रहें, दिगम्बर संतों की आध्यात्मिक ऊर्जा से परिपूर्ण हो स्वयं को समझें, स्वयं को जाने और दूसरों की बातों पर ध्यान न दें। गुरु हमारे जीवन का अंधकार नष्ट करने के लिए ही आते है। बंधुओं! बड़ा सौभाग्यशाली है वर्ष २०१८, इस वर्ष के प्रारम्भ में विश्व वंदनीय गोम्मटेश्वर भगवान बाहुबली स्वामी का महामस्तकाभिषेक निर्विघ्न ऐतिहासिक रूप से सम्पन्न हुआ। अनेक आयोजन हुए। १८ जुलाई २०१८ को संत शिरोमणि आचार्य विद्यासागरजी महाराज की दीक्षा के ५० वर्ष पूर्ण हो रहे हैं। सारा देश उनकी संयम दीक्षा स्वर्ण जयंती महोत्सव मना रहा है। जगह-जगह संयम के गीत गाए जा रहे हैं। ऐतिहासिक घटना हमें हमारे जीवनकाल में देखने को मिल रही है। हम सौभाग्यशाली हैं। आचार्यश्री वर्धमानसागरजी का २९ वाँ आचार्य पदारोहण दिवस श्रवणबेलगोला में १२५ साधुओं के सान्निध्य में मनाया गया है। मुझे प्रसन्नता है कि जीवन में जब भी अवसर मिला हमनें साधु समुदाय के दर्शन किये। उन्हें आहारदान देने का सौभाग्य प्राप्त किया।

अंत में मैं यही कहना चाहूँगी समाज में अनेक चर्चाएँ है, मत-मतांतर है, लेकिन आज हम सबकी जिम्मेदारी है कि साधुओं का सम्मान करें, अपनी परम्परा टूटने न दें। विशेषकर युवा पीढ़ी व बचपन जो संस्कारों की पाठशाला है, उन्हें मुनिसेवा, तीर्थवंदना, सेवा के संस्कार दे व तन-मन-धन से चातुर्मास को सफल करें व चातुर्मास के माध्यम से संत समुदाय का पूरा लाभ उठायें, उनकी चर्या में सहभागी बने और आध्यात्मिक चतुराई हासिल करें।

इन्हीं शुभकामनाओं के साथ

Sarita Jain

- सरिता एम.के.जैन
राष्ट्रीय अध्यक्ष

संकल्प से सिद्धि

– डॉ. अनुपम जैन

भगवान गोम्मटेश्वर बाहुबली, श्रवणबेलगोल के महामस्तकाभिषेक– 2018 का क्रम जारी है। जगद्गुरु स्वस्तिश्री भट्टारक चारुकीर्ति महास्वामीजी ने जनभावनाओं को दृष्टिगत कर महामस्तकाभिषेक का क्रम 31 अगस्त –2018 तक बढ़ा दिया है। पूज्य महास्वामी जी के दृढ़ संकल्प से यह महामहोत्सव अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर जैनत्व विशेषतः दिगम्बरत्व के गौरव को बढ़ाने वाला सिद्ध हो रहा है। 1981 से मैं तत अनुभव कर रहा हूँ कि इस अकेले क्षेत्र ने दिगम्बरत्व के वैभव को बहुत बढ़ाया है। सर्वत्र इस मूर्ति के आकर्षण एवं सम–सामयिक रूप में इस देश को **भारतवर्ष** नाम प्रदान करने वाले **बाहुबली** के भाई **भरत** एवं दोनों के पिता **ऋषभदेव** की चर्चा होती है। समाज के जो भाई–बहन अब तक अभिषेक का लाभ नहीं ले सके हैं वे अब शीघ्रता करें। सौभाग्य आपको बुला रहा है– भाग्य को जगायें। **संकल्प से सिद्धि** मिलती है यह इस महोत्सव की सफलता से प्रमाणित हो गया है। एतदर्थ पूज्य स्वामी जी का आशीर्वाद एवं निर्देशन तथा बहन श्रीमती सरिता जी (चेन्नई) की पूरी टीम की र्मठता एवं समर्पण ही मुख्य कारण है।

दिगम्बर जैन पिच्छीधारी संतों का वर्षायोग काल आ रहा है। आषाढ़ शुक्ल चतुर्दशी तदनुसार 26.07.2018 की तिथि आने ही वाली है। इस दिन अथवा अपवाद स्वरूप श्रावण कृष्ण पंचमी तदनुसार 02.08.18 तक सभी संत वर्षायोग की स्थापना कर लेंगे। यह हमारे सौभाग्य को जगाने वाला समय द्वार पर दस्तक दे रहा है। व्यापारिक एवं पारिवारिक मांगलिक कार्यों की अल्प व्यस्तता के कारण समाज बन्धु वर्षायोग अवधि में धार्मिक/सामाजिक कार्यों को अधिक समय दे पाते हैं। संतों का सान्निध्य उन्हें संयम पथ पर बढ़ने एवं तीर्थों/मंदिरों के प्रति अपने कर्तव्य के निर्वहन की प्रेरणा देता है। जहाँ जहाँ मुनि (आचार्य, उपाध्याय एवं मुनि) आर्यिका (गणिनी एवं आर्यिका) विराजमान हों वहाँ उनके पावन सान्निध्य में हम अपने नगर ग्राम के समीप स्थित तीर्थ (एक से अधिक होने पर अपनी रुचि/श्रद्धा/ सुविधानुसार कोई एक) के विकास/जीर्णोद्धार का संकल्प लेवें। यदि संकल्प दृढ़ होगा तो सिद्धि जरूर मिलेगी। विकल्पों से मुक्त होकर आत्मविश्वास पूर्वक यदि संकल्प लिया जाता है उन्हें साधनों की भी कमी नहीं होती क्योंकि कहा भी है कि

'जिन्हें आत्म विश्वास उन्हें फिर चिन्ता क्या साधन की'।

संकल्प से कार्यसिद्धि का एक उदाहरण मैं बताना चाहूँगा। भा.दि.जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी की मध्यांचल समिति ने निर्णय किया कि मध्यांचल के तीर्थों के विकास हेतु जन–जन का सहयोग प्राप्त किया जाये। समाजरत्न **श्री नवीन जी जैन (गाजियाबाद वालों)** के सहयोग से मध्यांचल को एक लोडिंग रिक्शा (आटो रिक्शा) प्राप्त हुआ। कवर्ड बाडी वाले इस लोडिंग रिक्शा के साथ 2–3 कार्यकर्ताओं ने इन्दौर के शताधिक जिन मंदिरों/कालोनियों में जाकर अखबारों/कॉपी/किताबों की रद्दी का संग्रहण शुरू किया। मंदिरों में पोस्टर लगाकर योजना का प्रचार किया गया। हमारी बहनों ने तीर्थों के प्रति अपनी श्रद्धा एवं आस्था का परिचय देते हुए मध्यांचल समिति को पर्याप्त मात्रा में रद्दी प्रदान की फलतः हर रद्दी संग्रहण केन्द्र पर काफी रद्दी इकट्ठा होने लगी। इस रद्दी को बेचकर मध्यांचल समिति को इतनी राशि प्राप्त हुई कि भीषण गर्मी के दिनों में मालवा–निमाड़ अंचल के 21 तीर्थों को वाटरकूलर दिये

जा सके। यानी रद्दी से वाटरकूलर वह भी एक नहीं 21 तीर्थों पर। भाई विमल जी सोगानी (अध्यक्ष), श्री जैनेश झांझरी आदि की टीम ने कमाल कर दिया। तीर्थसेवा का यह अनुपम उदाहरण है। **प्रशस्त भावना से लिया गया संकल्प सिद्धि (सफलता) को दिलाता है।** सोगानी जी ने स्वप्न देखा। नवीन जी ने प्राथमिक सहयोग दिया, जैनेश जी ने कर्मठता से क्रियान्वयन किया। सब साथियों की टीम जुटी एवं 21 वाटर कूलर हमारे तीर्थों तक पहुँच गये। रद्दी देने वाली हर माता–बहन को यह संतोष है कि उसके द्वारा दी गई रद्दी प्यासों को ठंडा पानी पिला रही है यह योजना अभी भी चल रही है। शीघ्र ही मध्यांचल के सभी तीर्थों तक वाटरकूलर पहुँचेंगे। यह योजना सभी आंचलिक समितियों के लिए अनुकरणीय है। दृढ़ संकल्प एवं सुनियोजित योजना से हम जन–जन को जोड़कर तीर्थ विकास को गति दे सकते है। मध्यांचल समिति को बधाई।

इन्दौर के एक दि. जैन सोशल ग्रुप ने शहर के समीप दि. जैन अतिशय क्षेत्र बनेड़िया जी के विकास का संकल्प 1 दशक पूर्व किया था। आज बनेड़िया जी में सब सुविधायें (भोजन–आवास) श्रेष्ठ रूप में उपलब्ध हैं।

वर्षायोग में हम सब युवाओं को जोड़कर समीपवर्ती तीर्थ के विकास की योजना बनायें। संतों का आशीर्वाद लेवें। कार्य जरूर सफल होगा एवं हमे यश एवं पुण्य मिलेगा। श्रेष्ठ योजनाओं एवं उनके परिणामों को हमें जैन तीर्थ वंदना में प्रकाशनार्थ भेजे।

आपकी योजनाओं की प्रतीक्षा रहेगी।

बड़ौत में श्रुतपंचमी एलाचार्य अतिवीरसागरजी महाराज के सान्निध्य में मनाते हुए

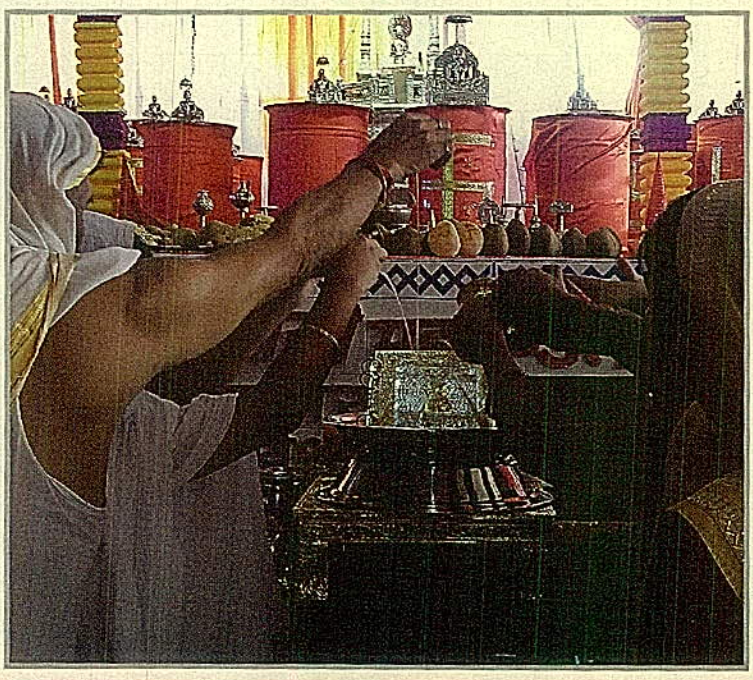

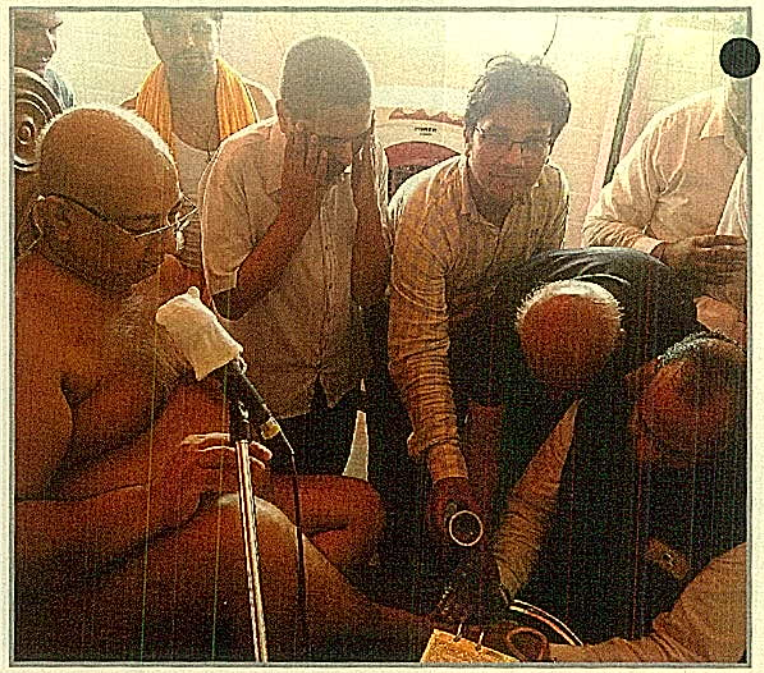

जैन तीर्थवंदना

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी एवं
भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र ट्रस्ट का

मुखपत्र

वर्ष 9 अंक 1 — जुलाई 2018

श्रीमती सरिता एम.जैन	अध्यक्ष
श्री प्रदीप जैन पी.एन.सी.	उपाध्यक्ष
श्री वसंतलाल एम.दोशी	उपाध्यक्ष
श्री नीलम अजमेरा	उपाध्यक्ष
श्री पंकज जैन	उपाध्यक्ष
श्री हुकम जैन 'काका'	उपाध्यक्ष
श्री संतोष पेंढारी	महामंत्री
श्री शिखरचंद पहाड़िया	कोषाध्यक्ष
श्री विनोद बाकलीवाल	मंत्री
श्री वीरेश सेठ	मंत्री
श्री शरद जैन	मंत्री
श्री खुशाल जैन सी.ए.	मंत्री

प्रधान संपादक
प्रो.अनुपम जैन, इंदौर

संपादक
उमानाथ दुबे

परामर्श मंडल

डॉ. भागचन्द जैन 'भास्कर', नागपुर
श्री शांतिलाल जैन जांगड़ा, उदयपुर
प्रो.डॉ.अजित दास, चेन्नई
प्रो.डी.ए.पाटील, जयसिंगपुर
श्री अनिलकुमार जोहरापुरकर, नागपुर
श्री स्वराज जैन, दिल्ली
श्री राजेन्द्र महावीर, सनावद

कार्यालय
भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी
हीराबाग, सी.पी.टैंक, मुंबई 400 004.
फोन : 022-2387 8293 फैक्स: 022-23859370
e-mail : tirthvandana4@gmail.com
e-mail : tirthvandana4@yahoo.com
Website : www.digamberjainteerth.com

मूल्य

वार्षिक	:	300 रुपये
त्रिवार्षिक	:	800 रुपये
आजीवन (दस वर्ष)	:	2500 रुपये

चातुर्मास में आध्यात्मिक चतुराई प्राप्त करें	3
संकल्प से सिद्धि	5
साधु चर्या का प्रधान अंग एवं आत्मसाक्षात्कार का अवसर है चातुर्मास	8
दिगम्बर जैन मुनियों की चर्या और चातुर्मास स्थापना	9
चातुर्मास - जैन दर्शन के अनुकूल संपन्न हो	11
जैन योग साधना का विकास	13
तीर्थक्षेत्र कमेटी की पदाधिकारी परिषद की बैठक	14
सक्षम गुरु के समर्थ शिष्य–आचार्य विद्यासागरजी	18
साक्षात् त्रिवेणी आचार्य श्री वर्द्धमानसागर जी महाराज	21
जैन अतिशय क्षेत्र बहोरीबन्द वैभव	24
सम्मान की परम्परा आज की नहीं भगवान ऋषभदेव के समय की	32

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थ क्षेत्र कमेटी के सदस्य बनकर तीर्थों के संरक्षण-संवधर्न और उनके विकास में मार्ग दर्शन दीजिए

संरक्षक सदस्य	रु.5,00,000/- प्रदान कर
परम सम्माननीय सदस्य	रु. 1,00,000/- प्रदान कर
सम्मानीय सदस्य	रु. 31,000/- प्रदान कर
आजीवन सदस्य	रु. 11,000/- प्रदान कर

नोट:

1) कोई भी फर्म, पेढ़ी, कम्पनी, चरिटेवल ट्रस्ट, संयुक्त कुटुम्ब सोसायटी या कार्पोरेट बॉडी भी उपरोक्त प्रावधान के अन्तर्गत सदस्य बन सकेंगे। इस प्रकार की सदस्यता केवल 25 वर्ष के लिए होगी।

2) जो सदस्य इनकम टैक्स की छूट चाहेंगे उन्हें 80जी के अन्तर्गत कुछ रकम पर 80जी का लाभ मिलेगा।

3) सदस्यता से प्राप्त राशि ध्रुवफण्ड में जमा रहेगी उसके व्याज की आय ही व्यवस्थापन एवं तीर्थक्षेत्र के संरक्षण, संवर्धन तथा उनके जीर्णोद्धार में व्यय की जायेगी।

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी को प्रेषित की जाने वाली राशि बैंक ऑफ बड़ौदा, वी. पी. रोड, मुंबई के सेविंग खाता क्र. 13100100008770, IFSC CODE BARB0VPROAD अथवा बैंक ऑफ इंडिया, सी. पी. टैंक, मुंबई के खाता क्रमांक 001210100017881, IFSC CODE BKID0000012 में किसी भी शाखा में नि:शुल्क जमा कराकर उसकी सूचना मुंबई कार्यालय को देने की कृपा करें।

पत्रिका में प्रकाशित विचार लेखकों के अपने हैं. सम्पादकों का इन विचारों से सहमत होना जरूरी नहीं है।

साधु चर्या का प्रधान अंग एवं आत्मसाक्षात्कार का अवसर है चातुर्मास

- ध्रुव कुमार जैन, प्रतापगढ़ (उ.प्र.)

चातुर्मास का मंगल क्षण अनादि काल से प्रत्येक वर्ष की भांति इस वर्ष भी आध्यात्मिक शिक्षाओं का संग्रह लेकर 26 जुलाई 2018 को अपना आगमन कर रहा है, प्रत्येक चातुर्मास स्थलों पर मंगल कलश की स्थापना हो रही है और ऐसे चातुर्मास स्थलों पर श्रमण और साधु के सभागम के साथ ही भक्त से भगवन्त बनाने की क्रियायें भी आरम्भ हो चुकी है। क्या हम भी ऐसे पूज्य स्थलों पर पहुंचकर खुद को निहारने का अवसर प्राप्त करना चाहेंगे?

जैन संस्कृति के सभी पर्व मानव कल्याण के पथ प्रदर्शक हैं। प्राणियों का कल्याण ही इस धर्म का मूल है। जैन धर्म हमें बतलाता है कि प्राणियों का कल्याण योग में है भोग में नहीं और योग का वास्तविक स्वरूप बतलाने के लिए ही अनादिकाल से वर्षा ऋतु में चातुर्मास रूपी मंगल साधना स्थलों की स्थापना होती आ रही है, जिसमें साधु ओर समाज का सदियों से साक्षात्कार होता आ रहा है। ऐसे साधना-स्थलों पर हमारे पूज्य साधुओं द्वारा त्याग-तपस्या-साधना का प्रयोग खुद पर करते हुए हमें जगाने का प्रयास किया जाता रहा है। जिस सुख की खोज प्राणी जन्म-जन्मातरों से करता आ रहा है उसका मार्ग यहीं से है, गुरुओं की वाणी ये है, उनके दिव्य उपदेशों को अन्तस्थल में उतारने से है।

साधु द्वारा विधिपूर्वक एक स्थान पर बिताया गया चार माह की अवधि का चातुर्मास कहलाता है। चातुर्मास साधु चर्या, का प्रधान है। इसके बिना आत्म-साक्षात्कार सम्भव नहीं है। चातुर्मास को ही वर्षावास या वर्षायोग भी कहते है। वर्षायोग दो शब्दों से मिलकर बना है, 1 वर्षा और योग शाब्दिक अर्थ मैं वर्षा का अर्थ है पानी बरसना और योग का, अर्थ है जोड़ना। अर्थात जिस प्रकार जब पानी आकाश से बरसकर धरती से मिलन करता है तभी उसमें अंकुरणों की उत्पत्ति होती है, उसी प्रकार से सन्त की वाणी रूपी वर्षा का पानी जब श्रावक (भक्त) रूपी भूमि में पहुंच जाती है तब उसमें धार्मिक संस्कारों का अंकुर प्रस्फुटित होने लगता है। दूसरे शब्दों में वर्षायोग साधु और श्रावक के संयोग सानिध्य और मंगल मिलन का अवसर होता है।

चातुर्मास की महन्ता पर यदि विचार करें तो वर्ष के ये चार माह आत्म साक्षात्कार हेतु पर्याप्त हैं, बशर्त खुद को गुरुओं के निर्देश से जोड़ लें। दूसरे शब्दों में आत्मा को उसके स्वरूप का दर्शन करने और मुक्ति पथ की ओर अग्रसर करनें की क्षमता रखता है चातुर्मास साधु और श्रावक के मांगलिक मिलन के साथ-साथ उस क्षेत्र में धर्म का बीज बीकर आत्म साधना का प्रदर्शन बनता है चातुर्मास भक्त को भगवान बनने के मार्ग को प्रशस्त करता है चातुर्मास।

वर्षावास अषाढ़ शुक्ला चतुर्दशी की पूर्व रात्रि से प्रारम्भ होता है और कार्तिक, कृष्णा चतुर्दशी की पश्चिम शति तक माना जाता है। चातुर्मास को स्थिर करने को प्रतिष्ठान कहते हैं। अषाढ़ शुक्ला त्रयोदशी के दिन मध्यान्ह काल में साधु किसी पवित्र स्थान की गवेषणा कर वृहदमत्ति, सिद्धमुक्ति, चैत्यमति, पंचगुरुभक्ति और शांति भक्ति का अनुपाठ और बन्दना करते हैं। इसी बंदना का मंगल गोचर मध्यांह बन्दना कहा जाता है। इसी तरह आषाढ़ शुक्ला चतुर्दशी की पूर्व रात्रि में सिद्ध भक्ति योग भक्ति पढ़कर चारों दिशाओं की वंदना करते हुए लघु चैत्य भक्ति का पाठ करते हैं। चारों दिशाओं की वंदना से तात्पर्य है चर्तुर्दिक चैत्यालयों की वंदना करना। कलश स्थापना के पश्चात् कार्तिक अमावस्या (दिपावली) से पूर्व साधु सामान्यत: अपना वर्षायोग-स्थल नहीं छोड़ते और यदि किसी उपसर्ग आदि के कारणों से स्थान छोड़ना पड़े तो उसका प्रायश्चित करते हैं। यदि किसी अन्य साधु की समाधि का प्रसंग उपस्थित हो जाये तो अड़तालिस कोस की दूरी तक उसे सम्पन्न कराने जा सकते हैं। वर्षाऋतु में चातुर्मास होने के कारणों पर यदि हम दृष्टिपात करें तो इसका प्रमुख कारण हिंसा से बचना ही परिलक्षित होता है। वर्षायोग स्थापन के पश्चात् ही ज्ञान, ध्यान और धर्म की गंगा बहने लगती है, आत्मा के बंद कपाट खुलने लगते है, समाज में धार्मिक संस्कार जागृति होने लगते हैं जैन धर्म की गूंज होने लगती है और क्रोध, मान, माया, लोभ एवं आत्मा दर्शन के सभी बाधक अपने भागने के मार्ग ढूंढने लगते है। इस तरह से साधू और श्रावक का अद्भुत समागम एक नयी दुनियाँ की अनुगूँज कराता है।

चातुर्मास तमाम व्रतों, धार्मिक क्रियाकर्मों एवं पर्वों का संग्रह है, जिसमें साधु और श्रावक दोनों ही त्याग और तपस्या के माध्यम से आत्माराधन करने का प्रयास करते हैं, साथ ही साधु अपने उपदेशों एवं प्रवचनों के माध्यम से पूरे समाज को जगाने का प्रयास करते हैं और अनेक धार्मिक क्रियाओं के माध्यम से पूरे देश में पूरे विश्व में जन-जन के अन्तस्थल में जैन धर्म का ध्वज फहराने का प्रयास करते हैं।

चातुर्मास के दौरान आने वाले पर्वों में पार्श्वनाथ निर्वाण दिवस, रक्षावन्धन, पर्यूषण पर्व, क्षमावाणी, दीपावली एवं महावीर निर्वाणोत्सव प्रमुख है और व्रतों में षोडश कारण, ऋतुस्कन्ध, जिनमुखावलोकन, मेघमाला, दशलक्षण, रत्नत्रय, पुष्पांजलि, आकाश, पंचमी, सुगन्धदशमी, अनन्त चतुर्दशी, चन्दनषष्टी, निर्दोष सप्तमी तीस चौबीसी, रुकिमणी व्रत, नि:शल्य अष्टमी, दुग्धरसी, शील सप्तमी ही तथा तिलोक तीज प्रमुख है।

आज आधुनिकता अपनी विशाल बाहें फैलाकर हमें अपनी ओर आकृष्ट कर रही है और हम भी सब कुछ भूलकर उस ओर बढ़ जाते हैं, लेकिन चातुर्मास का यह मंगल क्षण हमें उनसे दूरकर आत्म कल्याण के पथ पर अग्रसर कर देता है। धन्य है वह क्षेत्र जहाँ हमारे परमपूज्य, आचार्यों, मुनियों, आर्यिकाओं का चातुर्मास हो रहा है, धन्य है वे लोग जो इनके बीच रहकर अलौकिक सुख की अनुभूति कर रहे हैं और धन्य है वह स्थल जहाँ हमारे संतों की वाणी हमारे आत्मत्व को झंझोड़ दे रही है। ★★★★

दिगम्बर जैन मुनियों की चर्या और चातुर्मास स्थापना

– डॉ. नरेन्द्र जैन भारती, सनावद

भारत वर्ष की संस्कृति में धर्म,भाषा और रीति रिवाजों की प्रधानता है। धर्म की प्रधानता के कारण इसे धर्म प्रधान संस्कृति भी कहा जाता है। धर्म के जीवंत रूप संत हैं। संतों की अहिंसा और शाकाहार के प्रचार–प्रसार में महती भूमिका है। प्रमुख रूप से दिगम्बर जैन मुनि सत्य, अहिंसा, अस्तेय, अपरिग्रह और ब्रह्मचर्य का पालन करते हुए जगत् के प्राणियों को इन सिद्धांतों के पालन की प्रेरणा देते रहतें हैं। ये साधु ऐसा मानते हैं कि जैन तीर्थंकरों द्वारा उपदिष्ट जैन धर्म ऐसा धर्म है जिसे अपनाकर कोई भी आत्मा परमात्मा बन सकती है लेकिन इसके लिए रत्नत्रय अर्थात् सम्यक्दर्शन, सम्यक्ज्ञान और सम्यक्चारित्र को धारण करना होगा। रत्नत्रय के मार्ग पर वही चलता है जो ज्ञान, ध्यान और तप में लीन रहता है।

जैन धर्म राग–द्वेष,मोह के सर्वत्र त्याग की प्रेरणा देता है। ये गुण जैन संतों में पाये जाते हैं। त्याग और तपस्या की साक्षात् मूर्ति दिगम्बर जैन संत सर्वत्र अहिंसा और शांति का संदेश देते हैं। अतः सारा विश्व इन संतों के सामने नत मस्तक रहता है। उन्हें चारित्र प्रधान महामानव कहा जाता है इसलिए सच्ची श्रद्धा और भक्ति से व्यक्ति उन्हें नमस्कार करते हैं।

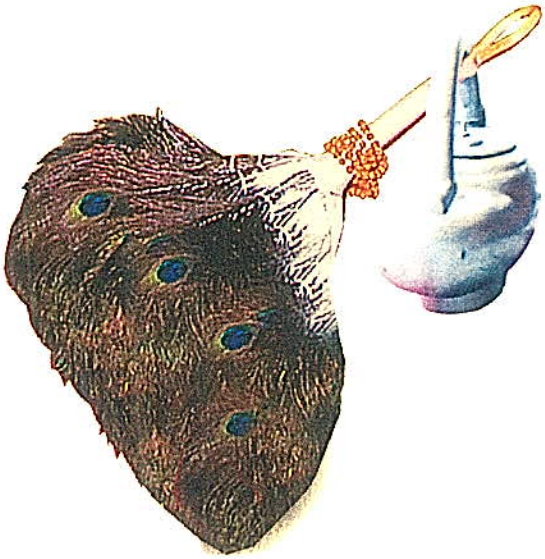

दुनिया में यह प्रसिद्ध है कि "रमता जोगी बहता पानी" अर्थात् " घूमता हुआ योगी और बहता हुआ पानी " अच्छा होता है। दिगम्बर साधु जब दीक्षा ग्रहण करते हैं तब समस्त प्रकार के परिग्रह का त्याग कर देते हैं। धन,मकान,सोना,चॉदी आदि का तो त्याग करते ही हैं; क्रोध, मान, माया, लोभादि कषायों का त्याग कर साम्यभाव धारण करते हैं। इस साम्यभाव के धारण करने से उनके कोई मित्र या शत्रु नहीं होते हैं। संसार के बीच रहते हुए भी वे जगत की सम्पूर्ण सुख सुविधाओं से रहित होकर जीवन व्यतीत करते हैं। आज की स्थिति यह है कि पाश्चात्य संस्कृति से प्रभावित व्यक्ति खान–पान, मौज–मस्ती के साथ जीवन व्यतीत करना चाहते हैं, अतः वे त्याग प्रधान जैन संस्कृति से दूर रहना चाहते हैं। ऐसी विषम परिस्थितियों में अपरिग्रही दिगम्बर जैन संत 24 घण्टे में मात्र एक बार ही आहार ग्रहण करते हैं उसमें भी यदि बाल, चीटीं या अशुद्ध पदार्थ आ जाता है तो वे उसे बीच में ही छोड़कर कुल्ला करके चल देते हैं जिसे अन्तराय माना जाता है। फिर पुनः दूसरे दिन ही आहार के लिए निकलते हैं । बीच–बीच में प्रसंगानुसार उपवास, आदि की क्रियायें भी साधु, धर्म के फल की प्राप्ति के लिए करते रहते हैं परन्तु सर्वत्र विहार कर सभी लोगों को सद्धर्म का उपदेश देते रहते हैं। साधु वर्षाकाल को छोड़कर सर्वत्र विहार करते हैं। यदि एक ही स्थान पर लम्बे समय तक रुकते हैं तो वह धर्म की चर्या के विपरीत कार्य करते हैं, इससे उनकी उस स्थान के प्रति मोहासक्ति दिखाई देती है। मूलाचार में लिखा है कि साधु को धर्मकार्य के निमित्त को छोड़कर किसी ग्राम या कस्बे में एक दिन और शहर में पॉच दिन से ज्यादा नहीं रुकना चाहिए। अतः साधु सर्वत्र विहार करतें हैं।

वर्षाकाल में साधु चार माह के लिए एक स्थान पर रुक जाते हैं जिसे वर्षायोग या चातुर्मास स्थापना कहते हैं। श्रावण, भाद्रपद, आश्विन और कार्तिक इन चार माह तक साधु एक ही स्थान पर रहकर धर्म ध्यान और साधना करते हैं। इस वर्ष चातुर्मास स्थापना 26 जुलाई को होगी । साधु और श्रावक दोनों के लिए चातुर्मास का महत्व होता है। वर्षाऋतु में चार माह तक वर्षा होती रहती है जिसके कारण पृथ्वी पर हरी घास उत्पन्न हो जाती है, जगह–जगह पानी भर जाता है। जिससे अनेक सूक्ष्म जीव जन्तु पृथ्वी पर उत्पन्न हो जाते हैं। ऐसी स्थिति में साधु अनवरत चलता है तो वह अहिंसा महाव्रत तथा ईर्या समिति का पालन नहीं कर पाता, जीव हिंसा की आशंका के चलते मन एकाग्र नहीं हो पाता। अतः साधुगण एक ही स्थान पर रुककर भक्ति आदि कर विधिवत् चातुर्मास ग्रहण कर लेते हैं। जिस स्थान पर चातुर्मास हो जाता है वहॉ के श्रावकगण यदि धार्मिक हैं तो अपने को सौभाग्यशाली मानते हैं। वर्षा ऋतु के दिनों में व्यक्ति घर पर

ही रहते हैं, व्यापार में मंदता रहती है। रक्षाबंधन, दशलक्षण पर्व आदि भी इसी दौरान आते हैं जिसके कारण सुषुप्त श्रावकों की भी धार्मिक भावनायें जागृत हो जाती हैं अतः वे ज्यादा से ज्यादा धर्म कार्य कर पुण्यार्जन करना चाहते हैं। अतः साधु और श्रावक दोनों के लिए वर्षायोग जीवन में नई उँचाइयों को प्राप्त करने का साधन है। साधुगण ज्ञान, ध्यान और तप में लीन रहते हैं तथा समय – समय पर धर्मोपदेश देकर श्रावकों को सन्मार्ग पर लगाते हैं। अतः दोनों को वर्षायोग यथेष्ठ फल देने में समर्थ है।

संसार में वही व्यक्ति महान कहलाता है जो निरन्तर श्रेष्ठ कार्यों को व्यवस्थित ढंग से करते हुए जीवन में नित नई उँचाईयों को प्राप्त करता हैं। समता निधि गणिनी आर्यिका विज्ञाश्री माता जी ने "कैसे मिले मन की शांति" नामक प्रवचन के दौरान एक महत्व पूर्ण उल्लेख किया। गुरु माँ ने बताया कि किसी व्यक्ति ने मुझसे पूछा – माता जी मैं श्रावक या मुनि? कौन सा जीवन जीउँ? माँ ने बस उनसे कहा कि जो भी जीवन जीओ, बड़े बेहतरीन तरीके से जीयो। चाहे साधु का या श्रावक का। केवल वेश बदलने से, हाथ में पिच्छी–कमण्डलु लेने मात्र से कोई संन्यासी नहीं हो जाता है; जब तक कि वह अपने जीवन को नहीं बदलता है। तथाकथित साधु से अच्छा वह श्रावक है जो अपनी सीमाओं का उल्लंघन नहीं करता। मर्यादा का पालन करता है वह ही असली शांति का अनुभव करता है। पूज्य माता जी ने बताया कि यदि जीवन में सुख–सम्पदा भी दांव पर लगाना पड़े तो लगा देना, कोई बात नहीं पर मर्यादा नहीं छोड़ना। (श्रुतसंवर्धिनी अक्टूबर 2017 से उद्धृत)

आज के संदर्भ में गणिनी आर्यिका विज्ञाश्री माता जी की यह बात बहुत महत्वपूर्ण है। आज एकल बिहारी साधुओं के कारण शिथिलाचार बड़ रहा है। आचार्य संघों में भी कई तरह के मत मतांतर हैं। कई आचार्यों के संघ नहीं हैं परन्तु आचार्य हैं, तो कुछ साधु आचार्य बने रहने के कारण एकाध साधु को संघ में रखते हैं। इन विकृतियों पर रोक लगना चाहिए।

चातुर्मास का शुभ संयोग श्रावकों के लिए यादगार रहे, यह ध्यान रखा जाना चाहिए। साधुओं के चातुर्मास को धन प्राप्ति का नहीं ज्ञान प्राप्ति का साधन बना कर चातुर्मास के कार्य सम्पन्न हो। धनी–मानी लॉबी हावी न हो। संयमियों, व्रतियों एवं विद्वानों को यथायोग्य सम्मान मिले, ऐसा प्रयास चातुर्मास समितियों को करना चाहिए। आज यह हम सभी का सौभाग्य है कि देश के कोने–कोने में साधुओं का विहार निर्विवाद निर्विघ्न रूप से जारी रहता है। आवागमन के साधनों की बहुलता के कारण साधुओं के दर्शन सुलभता से मिल जाते हैं। अतः साधुओं की वंदन तो हम सभी वर्ष भर करते रहते हैं लेकिन चातुर्मास के दौरान ज्ञान प्राप्त कर धर्म के यथार्थ स्वरूप को जानने का विशेष प्रयास करें। ताकि मानव जीवन को सार्थक कर सकें। चातुर्मास के दौरान सामाजिक एकता बनाये रखने के लिए भी कार्यकरें तभी चातुर्मास की सार्थकता दृष्टिगोचर होगी। ★★★★

ईडर (गुजरात) की धर्मनगरी में प्रथम बार

प्राकृताचार्य श्री 108 आचार्य सुनील सागरजी महाराज ससंघ का भव्य आगमन

धर्मनगर ईडर में आचार्य श्री 108 सुनील सागरजी महाराज के ससंघ आगमन पर उनका भव्य स्वागत किया गया। इस अवसर पर ईड़र गढ़ (देवगिरि पर्वत) पर तृतीय बार मानस्तंभ का महामस्तकाभिषेक कार्यक्रम महती धर्म प्रभावना के साथ दिनांक 16,17 एवं 18 जून 2018 को सम्पन्न हुआ। सौधर्म इन्द्र बनने का सौभाग्य शाह राजेन्द्रकुमार नाथालाल परिवार को मिला प्रथम सुवर्ण कलश का लाभ श्री अरविन्द भाई गांधी को मिला। इस अवसर पर दूर-दूर से हजारो की संख्या में धर्मबंधुओं का आगमन हुआ था। ईडर के सभी भाई बहनों ने दर्शन एवं पंचामृत अभिषेककर पुण्य लाभ लिया । आचार्य श्री के प्रवचन में अनेकों श्रावक, श्राविकाओं ने भाग लेकर कार्यक्रम को सफल बनाया। पहाड़ पर भोजन एवं आवास की सुन्दर व्यवस्था की गई थी। इस अवसर पर नया **"संत-भवन"** बनाने का निश्चय किया गया। जिसके लिए श्री संघवी परिवार एवं श्रीमती पद्मावती बेन, श्री अमृतलाल गांधी परिवार मुख्य दातार बने। इस कार्यक्रम में अहमदाबाद के श्री अजितभाई मेहता, श्री अशोक भाई मेहता, श्री डी.सी. गांधी भी पधारे थे। आचार्य श्री का चातुर्मास करने के लिए ईडर, गांधी नगर, उदयपुर, डंगरपुर सागवाड़ा, नरवाली, पारसोला, तारंगा, आदि स्थानों से पधारे हुए महानुभावों ने श्रीफल भेंट किये। बहुत अधिक धर्मप्रभावना हुई। ईडर के युवक मण्डल ने जोर-शोर से काम किये श्री नरेन्द्रभाई शाह, प्रमुख श्री दिनेशभाई, श्री आश्विनभाई गांधी, श्री चिरागभाई, श्री अजयभाई, श्री कनकभाई, श्री मनीषभाई और महिला मण्डल की सभी बहनों ने सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किये तथा गुरुवर के चरणों में मंगल आरती प्रस्तुत कर सत्-सत्वंदन किया।

- अश्विन पी. गांधी

चातुर्मास - जैन दर्शन के अनुकूल संपन्न हो

- महावीर दिपचंद ठोले,औरंगाबाद.

जैन धर्म को अनादि काल से विश्व का अध्यात्म गुरु माना जाता है. इसके सांस्कृतिक इतिहास मे चातुर्मास की प्रशस्त परम्परा है. एक साथ चार माह एक ही स्थान पर साधु-मुनि साधना करके जनजीवन के रचनात्मक उत्कर्ष मे अपनी चर्या समर्पित कर देते हैं. प्राचीन काल में वर्षायोग मे मुनिगण प्रायः वनों मे रहकर आत्मसाधना करते थे और आहार ग्रहण या प्रवचन हेतु ग्रामादिक में आते थे. कालांतर मे निर्जन खण्डहर या एकान्त गुफा आदि मे वर्षायोग संपन्न करने लगे. इसके प्रमाण हैं, सौराष्ट्र में गिरनार की चंद्रगुफा, तामिलनाडु में बदामी गुफा, श्रवणबेलगोला की आचार्य भद्रबाहु गुफा, उड़ीसा में उदयगिरी-खण्डगिरी की गुफा जिसमें श्रमणों के चातुर्मास व्यतीत हुए हैं. श्रमण यानि मोक्ष पथ का पथिक मात्र अपनी आत्मा के लिए श्रम करने वाला. आज से ७०/८० वर्ष पूर्व श्रमण परम्परा बहुत ही गरिमापूर्ण एवं गौरवशाली थी, आचार्य शांतिसागरजी, आदिसागरजी, शांतिसागरजी (छाणी) वीरसागरजी, चंद्रसागरजी, महावीरकिर्तीजी, देशभूषणजी आदि जैनाकाश के प्रकाशपुञ्ज थे. जिनका प्रभाव, अनुशासन, देशना चारित्र सब कुछ बेदाग था, स्फटिक सदृश्य था एवं सर्वस्त उनका व्यापक प्रभाव था. इनके चातुर्मास जहाँ जिनमंदिर विद्यमान हों और भक्तगण धर्मपरायण हों या जहाँ आत्मसाधना की अनुकूल परिस्थितीयाँ हों ऐसे स्थानों पर सादगी से संपन्न होते थे और जहाँ भी संतों के चातुर्मास संपन्न होते थे वह स्थान तीर्थ बन जाता था. चारों ओर विकास की सम्भावनाएं स्वर्णिम हो जाती थी. लोकोपचार की अनेक महत्वपूर्ण योजनाएं भी साकार होती थी. जनजीवन धर्म से सरस बनजाता था. मानवता की विश्वबंधुत्व की, वात्सल्य की हरियाली लहलहाने लगती थी. वहाँ साधना के सरस सुमन खिलते थे. परंतु आज चातुर्मास की मूल भावना ही समाप्त होती दिखाई देती है. अधिकांशतः संतों के चातुर्मास समापन के बाद में आजकल समाज का अनुभव खटटा मीठा ही देखा जाता है. सफलता के पैमाने को लेकर समाज और साधु दोनों ही आजकल दिशा भ्रमित हुये सो लगते हैं, जो कि चिन्तनीय बिन्दु है और दोनों के लिए घातक है. चातुर्मास सम्पन्न कराना बहुव्यय साध्य हो गया है.

किसी भी कार्य के प्रारंभ में मंगलता के लिए मंगल द्रव्यों के साथ मंगल कलश को स्थापित किया जाता है. उसी प्रकार चातुर्मास के प्रारंभ में मंगल कलश मंगलता हेतु ही स्थापित किया जाता है, परंतु श्रावकों ने व्यापारियों ने इस व्यवस्था को व्यापार का रूप दे दिया है. लाखों रुपयों से मंगल कलश की स्थापना की बोलीयाँ की जाती हैं. कलश स्थापना किस संत की कितने रुपयों से हुए इसकी स्पर्धा चलती है और उससे साधु का प्रभाव मापा जाता है. यह एक विकृती है. समाज की सर्वोच्च साध्वी गणिनी प्रमुख ज्ञानमती माताजी का कहना है कि आगम के अनुसार पूर्व में मंगल कलशों की स्थापना कभी भी बोलीयों से या धनवर्षा से नहीं हुयी है, परंतु आजकल साधुओं की त्याग, तपस्या और संयम को पैसों से तोला जा रहा है. ख्याति, प्रतिष्ठा पूजा का ऐसा रोग (स्लो-पायजन) सर्वत्र फैल गया है. जिससे साधुत्व संकट में आ गया है. आचार्य कुंद कुंद स्वामी ने अपने ग्रंथ में लिखा है साधु की निग्रंथता, पदविहार, केशलोंच, एकबार खडे रहकर आहार, पिछी, कमंडलु, त्याग, तपस्या और साधना बड़ी अनमोल है, इसे पैसों से नहीं तोलना चाहिए परंतु प्रतिस्पर्धा एवं पंथवाद को बढावा देनेवाले एवं व्यक्तिगत यशोलिप्सा, महत्वाकांक्षा के कारण अधिकांश श्रमण पुण्य के विक्रेता के रूप में दिखाई दे रहे हैं. अर्थ संग्रह में उनकी भूमिका निजी भक्तों और निजी क्षेत्रों से उनके रागभाव अपरिग्रही महाव्रती के दूषण बन गये है. जिन संतों ने स्व-परहित के लिए अपना सब कुछ छोडा उन संतों का आकलन हम उसी परिग्रह से करें तो हम विचार करें कि हम किस दिशा में जा रहे हैं. कुछ ऐसे प्रश्न हैं

जो बताते हैं हम चातुर्मास नहीं बनियागिरी कर रहे हैं. धनसंग्रह व भीड़ संग्रह चातुर्मास की सफलता के माप दण्ड बन गये हैं. जो जैन दर्शन के अनुकूल नहीं कहे जा सकते हैं. वीतरागी निर्ग्रंथ साधु, अपरिग्रह के सर्वोच्च मानक की जीवनशैली इतनी खर्चीली हो गयी है कि चातुर्मास हेतु लाखों करोड़ों रुपयों के बजट के कारण सर्वसाधारण समाज परेशान है. कुछ श्रावक अपने अर्थ बुध्दि से अपना नाम स्थापित करने हेतु चातुर्मास को प्रभावित कर धर्म मे धंदा ढूंढ लेते हैं. भव्य पोस्टर, भव्य मंच, सुस्वादुभोजन, भव्य जुलूस और न जाने क्या क्या? भव्यातिभव्य और पहले ऐसा कभी कहीं भी नहीं हुआ हो ऐसा काम दिखाने की होड़ लगी है परंतु आखिर हम क्या करना चाहते हैं? इस बात का कोई लक्ष्य दिखाई नहीं देता. यह निश्चित है कि आज आधुनिकता अपनी विशाल बाहें फैलाकर हमें अपनी ओर आकृष्ट कर रही है और हम भी सबकुछ भूलकर उस ओर बढ़ जाते हैं.लेकिन चातुर्मास का यह मंगलक्षण हमें पुनः उससे दूर कर आत्मकल्याण के पथपर अग्रसर कर देता है.

जिस प्रकार बादल की सार्थकता बरसने में है, पुष्प की सुगंध में तथा सूर्य की सार्थकता रोशनी में है उसी प्रकार चातुर्मास की सार्थकता परिवर्तन में है, अतः हम चातुर्मास को चिन्तनमास के रुप मे मनाएं, ऊर्जा संग्रह का मापक बनाएं, धर्म से भटके हुए को सही मार्ग पकड़ने का प्रकाश बनाएं, दुसरों के गुण और अपने दोशों का अवलोकन करें यही चातुर्मास की सार्थकता है, हमें चाहिए कि चातुर्मास में प्रदर्शन की अपेक्षा आत्म दर्शन,सम्यगदर्शन को महत्व दें, व्यर्थ की बकवास, फिजुलखर्ची, विज्ञापन बाजी मे न पड़ें अनावश्यक पत्रिका, पंम्पलेट, फोटो, व्हिडीयो शूटींग व किताबें भी अंततः अपमानित (अविनय) स्थिती में पहुँचती हैं. इनके प्रकाशन से बचें, दोषपूर्ण सजावट, गीतसंगीत अत्याधिक प्रकाशवाले संसाधनों के प्रयोग से दूर रहें. प्रदर्शनवाले कार्य की जगह दीर्घकालीन लाभवाले कार्य को प्रमुखता दें. चातुर्मास को व्यर्थ के आडम्बरों से मुक्त रखने का प्रयास हो. चातुर्मास के दौरान समाज को कुछ ऐसा लाभ हो जिससे उसकी दशा-दिशा ही बदल जाए, ऐसे कार्य हो जिससे समाज मे चेतना आ जाए, कुछ ऐसे ठोस कार्य प्रतिबध्दता के साथ अमल में लाएं जिनकी आज हमारे समाज को सख्त जरूरत है. शिक्षा क्षेत्र में समाज को जागरुक किया जाए, असहाय लोगों की सहायता हेतु ध्रुवफंड का निर्माण हो, समाज में व्याप्त अंधविश्वास व रुढी पर रोक लगे, मृत्युभोज, रात्रीविवाह आदी बंद हो, नई पीढ़ी को धर्म से जुड़ाने का प्रयास हो, वे मंदिर और साधुओं से दूर क्यों हो रहे हैं, इस बात पर भी चिन्तन करें और जुड़ने हेतु प्रेरित करें.

जाति, पंथ एवं संत के नाम पर विभक्त समाज को प्रेम वात्सल्य के माध्यम से अखण्डता की प्रेरणा प्रदान करें, जहाँ जो पध्दति चल रही है, उसमे छेड़ छाड़ न करें और श्रमणों के चर्या में दूषण लगे ऐसा कोई भी कार्य ग्रहस्थ को न करने दें. श्रमणों को चाहिए की अपनी साधना को निर्दोष बनाए रखने के लिए सावधानी बरतते हुए गुप्ति समितियों का पालन हो और चार अनुयोगों के अनुसार ही उपदेश दें. ऐसे वचनों का प्रयोग न हो कि समाज के टुकड़े हो जाएं पंथवाद व पक्षपात के बीज बोना मतलब सामाजिक समरसता मे जहर घोलना इससे अवश्य बचें. विषमता को हटाकर स्वयं भी समत्व में रमें. पंचपरमेष्ठी परमपद से बढ़कर दूसरा कोई पद नहीं है. साधु को चाहिए कि वह इस परम पद की गरिमा को बनाए रखे. बेशक आज भी अनेक संतों के चातुर्मास परम्परा के निर्वाह के साथ समाज को बहुत कुछ देते हैं.

प्रतिवर्ष की भांति चातुर्मास ने पुनः दस्तक दे दी है. अनेक साधुओं के चातुर्मास स्थल निश्चित हो गये हैं. हमारे मंदिरों के सूचना पट्ट एक से एक बहुरंगी पोस्टरों से, बड़े बड़े आमंत्रण पत्रिकाओं से भर जाएंगे. मैं इस लेख के माध्यम से संपूर्ण समाजजनों से अपील करना चाहता हूँ कि चातुर्मास समागम को हम चिंतन पूर्ण बनाएं व श्रेष्ठ से श्रेष्ठ चातुर्मास संपन्न हो. आप हम सभी प्रज्ञावान हैं. श्रमण, श्रावक, विज्ञान, पंडित, शीर्षस्थ पदाधिकारी, समाजसेवी, दानवीर सभी मिलकर कुछ ऐसा चिंतन करें जो धर्म व समाज के लिए उपयोगी व उपकारी हो. कम से कम लागत से अधिकाधिक धर्म प्रभावना होकर बचत राशि से समाज को ठोस व स्थायी उपलब्धि प्राप्त हो. नियमित पाठशाला का निर्माण हो, विशाल बहुउपयोगी अस्पताल, स्कुल, कॉलेज खुले, चातुर्मास मील का पत्थर साबित हो, बशर्ते हमारी सोच दूरगामी हो और कुछ कर गुजरनेकी ललक हो. इस वर्ष हम सभी ऐसा निर्णय लें कि, चातुर्मास की पत्रिकाएं ही न छपवायें, आनेवाले अतिथियों का भक्तों का योग्य सन्मान हेतु मात्र तिलक लगाकर स्वागत हो, कोई मोमेन्टो, शाल न दें. पत्रिकाओं का, मोमेन्टो का, फोटोओं का अविनय हो रहा है. इस पर रोक लगे और देखें कि इससे चातुर्मास संपन्नता में कुछ कमी आती है क्या ? चातुर्मास में भव्यता के साथ सादगी बरतते हुए धर्म की परिपूर्ण प्रभावना हो.

चातुर्मास में किसी का उपहास न होते हुए संपूर्ण समाज को बिना भेदभाव को आशिर्वाद प्राप्त हो और मात्र धनसंग्रह ही लक्ष्य न हो, और समाज को पुनः अगला चातुर्मास संपन्न करवाने की प्रेरणा देने वाला सिध्द हुआ हो. आज नहीं तो कल हमें इन प्रश्नों के महत्व को स्वीकार करना ही होगा. आइए साधु और श्रावक दोनों चर्चा, परिचर्चा कर चिंतन कर उचित निर्णय लें और वर्षायोग पुनः जीवन्त बनाएं. संसार में असंभव कुछ भी नहीं है. जहाँ चाह वहाँ राह है. अंधकार भरी रात्रि के पश्चात पुनः सुर्योदय होना ही है.

जैन योग साधना का विकास

-प्रो अनेकांत कुमार जैन,नई दिल्ली

योग विद्या के जनक प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव ने प्रागैतिहासिक काल में जो योग साधना विधि का प्रवर्तन किया वह भगवान् महावीर के समय तक अविछिन्न रूप से चलती रही । भगवान् महावीर के प्रमुख शिष्य गौतम आदि ग्यारह गणधरों तक ने उस साधना पद्धति को प्रायोगिक रूप से जीवित रखा, फिर वह कुछ समय जम्बूस्वामी तक चलती रही,योग का मुख्य लक्ष्य मोक्ष प्राप्त होता रहा । काल के परिवर्तन के कारण पंचम काल में यह साधना प्रायोगिक रूप से कुछ अवरुद्ध हुई और साक्षात् मोक्ष की प्राप्ति असंभव हो गयी । किन्तु साधना का क्रम रुका नहीं । प्रथम शती में आचार्य कुन्दकुन्द ने पुन: जैन योग साधना और अध्यात्म की पुनः प्रतिष्ठा की और आत्मानुभूति का मार्ग प्रशस्त किया । इसके बाद अध्यात्म और साधना की संयुति चलती रही । छठी शती तक आचार्य पूज्यपाद ने इस अवधारणा को बनाये रखा । आठवीं शती में आचार्य हरिभद्र तथा आचार्य शुभचन्द्र ने, ग्यारहवीं शती में आचार्य हेमचन्द्र ने जैन योग की व्याख्या सुप्रसिद्ध आचार्य पतंजलि के परिप्रेक्ष्य में भी करना शुरू कर दी । इस प्रकार जैन योग साधना की अवधारणा सबसे पहले अपनी चरम अवस्था पर थी, बाद में मध्यकाल में यह धारा विच्छिन्न भी हुई किन्तु कालांतर में उसका युगानुरूप क्रमशः विकास हुआ ।जैन योग साधना पर आधारित स्वतंत्र ग्रंथों का प्रणयन भी प्रारंभ हो गया । जैन योग साधना पर आज तक जो ग्रन्थ लिखे गए हैं उनकी संख्या हजारों में है । अभी भी सैकड़ों ग्रन्थ शास्त्र भंडारों में पांडुलिपि के रूप में अपने उद्धार की प्रतीक्षा में भी बैठे हैं ।

जैन योग साधना विभिन्न रूपों में हमारे सामने आना शुरू हो गयी है । वातावरण ,युग और परिस्थिति के अनुरूप उसमें काफी विकास किया गया । मंत्र साधना भी उसका एक अंग बना । वर्तमान युग में भी अनेक नए प्रयोग प्राचीनता को जीवित रखने के प्रयास में प्रारंभ हो गए हैं । आज योग का मुख्य लक्ष्य मोक्ष की प्राप्ति के स्थान पर मानसिक शांति और शारीरिक स्वस्थ्य हो गया है । इस प्रकार का लौकिक प्रयोजन इसलिए अभीष्ट बन गया क्योंकि लोगों के शरीर की और मन की क्षमता कम हो गयी और विषय भोग बढ़ गए । लोगों को विषय भोगों से हटा कर मन और तन को स्वस्थ्य बना कर फिर धर्म ध्यान के योग्य बनाने का ही लक्ष्य प्रधान हो गया है ।

यह भी युग की आवश्यकता है । तन-मन जिसका स्वस्थ्य नहीं होगा वह धर्म के मार्ग पर वैसे भी आगे नहीं बढ़ पायेगा । किन्तु यह छोटा लक्ष्य है, साधन को हमने साध्य बना लिया है । अभी इस दिशा में एक सावधानी यह रखनी है कि इस तन को निरोग रखने के चक्कर में शरीर से आसक्ति कम करने या समाप्त करने वाले मूल लक्ष्य से भटक कर, जैन योग कहीं शरीर में ही अटका न रह जाए । जैन योग की भेद विज्ञान की मूल अवधारणा कोरे शब्दों में न सिमट जाए । आत्मानुभूति का पावन उद्देश्य बना रहे तभी ध्यान, आसन, प्राणायाम आदि भी सार्थक रह सकते हैं ।

वर्तमान में प्रेक्षाध्यान, समीक्षण ध्यान, अर्हम योग, वीतराग ध्यान, त्रिलोक लोकध्यान आदि अनेक पद्धतियाँ जैन साधकों द्वारा चलायी जा रही हैं । उनके एकीकरण की आवश्यकता भी महसूस की जा रही है । अधिकाँश ध्यान पद्धति श्रावकों को लाइन पर लगाने के उद्देश्य से चलाई जा रहीं हैं जो कि युग की एक बहुत बड़ी आवश्यकता है । व्यसन मुक्त और स्वस्थ्य मानसिकता का मंद कषाय वाला सात्विक मनुष्य ही अपना और धर्म तीर्थ दोनों का कल्याण कर सकता है । इस विषय पर हमें निरंतर अनुसंधान करते रहने की आवश्यकता है ।

★★★★

विद्वत्परिषद् के तत्त्वावधान में गिरनारजी में राष्ट्रीय संगोष्ठी

परम पूज्य, गिरनार गौरव, आचार्य श्री 108 निर्मलसागरजी महाराज के ससंघ सान्निध्य, क्षुल्लक श्री 105 समर्पणसागरजी महाराज के निर्देशन, श्री अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन विद्वत्परिषद् के तत्त्वावधान में दिनांक 17 एवं 18 जुलाई 2018 को भगवान श्री नेमिनाथजी की निर्वाण स्थली तब और अब विषय गिरनारजी में राष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजित है। आयोजक- विश्वशांति निर्मन ध्यान केन्द्र ट्रस्ट, गिरनार तलेटी, भवनाथ, जूनागढ़ (गुज.). स्वागताध्यक्ष- श्री ज्ञानचन्द्र बड़जात्या- मुम्बई, संगोष्ठी अध्यक्ष- प्रो. भागचन्द्र जैन भास्कर नागपुर, सयोजक- डॉ. महेन्द्रकुमार जैन मनुज-इन्दौर रहेगे। चयनित विद्वानों को अलग से आमंत्रण पत्र के साथ विस्तृत कार्यक्रम की जानकार प्रेषित की जा रही है। दिनांक 17 जुलाई को पूज्य, गिरनार गौरव, आचार्य श्री 108 निर्मलसागरजी महाराज की 51 वाँ स्वर्णिम दीक्षा जयंती महोत्सव है, इस अवसर पर गुरुपूजन, विनयांजलि एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम होंगे व 19 जुलाई को श्री 1008 भगवान नेमिनाथ स्वामी का निर्वाण लाडू गिरनार पर्वत की आलोक टोंक पर चढ़ाया जायगा।

- डॉ. महेन्द्रकुमार जैन मनुज इन्दौर,

24 जून 2018 को जयपुर (राज.) में तीर्थक्षेत्र कमेटी की पदाधिकारी परिषद की बैठक अनेक महत्वपूर्ण निर्णयों के साथ सम्पन्न

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी की पदाधिकारी परिषद की मीटिंग रविवार दिनांक 24 जून 2018 को श्री दिगम्बर जैन नसिंया भट्टारकजी, नारायण सिंह सर्किल जयपुर (राज.) में कमेटी की अध्यक्षा श्रीमती सरिता एम.के.जैन की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। इस अवसरपर दिगम्बर जैन महासमिति, महासभा एवं दक्षिण भारत जैन सभा के अध्यक्षों के अतिरिक्त जयपुर के विशिष्ट महानुभावों को विशेष रूप से आमंत्रित किया गया था। मंगलाचरण के पश्चात् सभा में पधारे हुए सभी महानुभावों का तिलक लगाकर शाल एवं राजस्थान की सान पगड़ी पहनाकर सभी का स्वागत किया गया।

महामंत्री श्री संतोष जैन पेंढारी ने बैठक में पधारे हुए सभी महानुभावों से निवेदन किया कि आज की मीटिंग का एजेंडा अत्यन्त महत्व पूर्ण है। अत: उसी विषय पर चर्चा होगी कृपया अन्य विषयों पर चर्चा न करें। श्री राजेन्द्र कुमार गोधा ने एजेन्डा पढ़कर सुनाया और अध्यक्ष महोदया को अपना विचार व्यक्त करने का निवेदन किया। राष्ट्रीय अध्यक्षा श्रीमती सरिता एम.के.जैन ने कहा कि शिखरजी हमारी अस्मिता का प्रश्न है। हमारी पहचान है। इसलिए शिखरजी की रक्षा के लिए आप सभी को आगे आकर सहयोग करना चाहिए। यद्यपि श्वेताम्बर भाइयों के साथ समझौता समाधान साधने का प्रयत्न अंतिम दौर तक करुंगी परन्तु यदि किसी कारण से बात नही बनी तो कानूनी कार्यवाही ही एक मात्र विकल्प हमारे सामने रहेगा।

बैठक में श्री सम्मेदशिखरजी एवं श्री अंतरिक्ष पार्श्वनाथ क्षेत्र, सिरपुर से सम्बन्धित जो कोर्ट केसेस सर्वोच्च न्यायालय में चल रहे हैं उसकी प्रगति की जानकारी के साथ आगे की रणनीति निर्धारित की गई।

श्री अशोक पाटनी (आर.के.मार्बल्स) ने सुझाव दिया कि कानूनी व्यवस्था मजबूत एवं स्थायी होनी चाहिए। तीर्थक्षेत्र कमेटी के चुनाव आदि होने पर पदाधिकारियों में फेर बदल हो जाते हैं जिससे समितियों में भी बदलाव हो जाता है अतएव भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के अध्यक्ष एवं महामंत्री (पदेन) के अन्तर्गत कानूनी कार्यवाही हेतु एक स्थायी समिति गठित की जानी चाहिए और उन्हें केस की पूरी जिम्मेदारी सौंप देनी चाहिए यह समिति जब तक कोर्ट केसेस चलेंगे तब तक स्थायी रूप से कार्य करती रहेगी। इस आशय का प्रस्ताव सर्वानुमति से स्वीकृत किया गया **कानूनी समिति का चेयरमैन श्री वसंतलाल एम.दोशी सदस्य: श्री वीरेश सेठ, जबलपुर एवं श्री पंकज जैन, (चेयरमैन पारस चेनल)** को सर्वानुमति से नियुक्त किया गया। यह समिति तीर्थक्षेत्र कमेटी के पदेन अध्यक्ष एवं महामंत्री को समय-समय पर केसों की जानकारी देती रहेगी। कमेटी के अध्यक्ष एवं महामंत्री को उपरोक्त केसों की पैरवी में सहयोग देने के लिए अन्य प्रतिनिधि सदस्य को भी नियुक्त करने का अधिकार रहेगा।

पश्चात् महासभा के अध्यक्ष श्री निर्मलकुमार सेठी ने श्री गिरनारजी की पांचवी टोंक पर अनाधिकृत रूप से बैठाई गई दत्तात्रय की मूर्ति हटाये जाने पर जोर दिया और कहा कि इसके लिए यदि सुप्रीम कोर्ट जाना पड़े तो जाना चहिए। श्री सम्मेदशिखरजी (पारसनाथ) हिल के बारे में कहा कि आदरणीय श्री लालू प्रसादजी यादव जब बिहार के मुख्यमंत्री थे तो उन्होंने शिखरजी (पारसनाथ) हिल के बारे में एक अध्यादेश (आर्डिनेन्स) मंजूर कर उसे राष्ट्रपति की मंजूरी के लिए भेजा था। इस अध्यादेश के अनुसार पूरा शिखरजी पहाड़ जैनों (श्वेताम्बर दिगम्बर) को मिल जाता। आज वहाँ की जो स्थिति बन रही है उसे देखते हुए यह आवश्यक है कि श्वेताम्बर-दिगम्बर मिलकर यदि इस अध्यादेश को झारखण्ड सरकार द्वारा मंजूर करा लेते हैं तो पूरा पहाड़ जैनों का हो जायेगा जिससे अजैन का जो प्रवाह वहाँ बढ़ रहा है उस पर रोक लग सके।

मीटिंग के पश्चात् श्री अशोक पाटनी, (आर.के.मार्बल्स) श्रीमती सरिता एम.के.जैन, श्री सन्तोष जैन पेंढारी, श्री राजेन्द्र गोधा एवं श्री विनोद बाकलीवाल, परम पूज्य मुनिपुंगव सुधासागरजी महाराज का आशीर्वाद प्राप्त करने नारेली भी गये। मीटिंग की संपूर्ण व्यवस्था श्री राजेन्द्र गोधा, जयपुर द्वारा की गई थी। मीटिंग में कमेटी के संरक्षक श्री नरेश कुमार जी सेठी, श्री अशोक पाटनी (आर.के.मार्बल्स) अध्यक्ष श्रीमती सरिता एम.के.जैन कमेटी के उपाध्यक्ष श्री वसंतलाल एम.दोशी, श्री नीलम अजमेरा, श्री पंकज जैन (चेयरमैन पारस चेनल) महामंत्री श्री संतोष जैन पेंढारी, कोषाध्यक्ष श्री शिखरचन्द पहाड़िया, श्री राजेन्द्र गोधा, कर्नाटक अंचल के अध्यक्ष श्री डी.आर.शाह, मंत्री- श्री विनोद कुमार बाकलीवाल मैसूर, श्री शरद जैन (भोपाल) श्री वीरेश शेठ (जबलपुर) श्री प्रभात सेठी (प्रतिनिधि - पूर्वांचल समिति) महासभा के अध्यक्ष- श्री निर्मल कुमार सेठी, महासमिति के अध्यक्ष - श्री अशोक बड़जात्या, दक्षिण भारत जैन सभा के चेयरमैन श्री डी.ए.पाटिल, जयपुर के श्री विवेक जी काला, श्री पूनमचन्दजी शाह एडवोकेट, श्री सुरेश सबलावत, श्री मेहन्द्र कुमार पाटनी, श्री रवीन्द्र बज, श्री प्रकाश पाटनी, श्री अभिनव जैन (दिल्ली) आदि महानुभावों की उपस्थिति विशेष उल्लेखनीय रही।

24 जून 2018 को जयपुर (राज.) में संपन्न हुई तीर्थक्षेत्र कमेटी की पदाधिकारी परिषद की बैठक की झलकियाँ

24 जून 2018 को जयपुर (राज.) में संपन्न हुई तीर्थक्षेत्र कमेटी की पदाधिकारी परिषद की बैठक की झलकियाँ

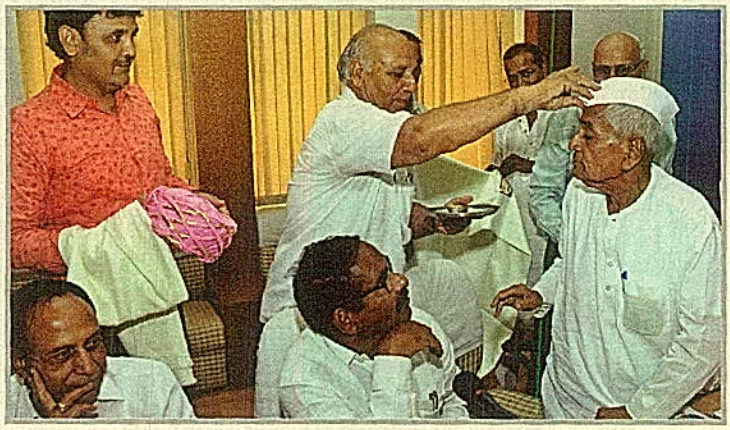

24 जून 2018 को जयपुर (राज.) में संपन्न हुई तीर्थक्षेत्र कमेटी की पदाधिकारी परिषद की बैठक की झलकियाँ

सक्षम गुरु के समर्थ शिष्य – आचार्य श्री विद्यासागरजी

– राजेन्द्र जैन 'महावीर'

हजारों वर्ष नरगिस अपनी बेनूरी पर रोती है ।
तब कहीं जाकर होता है चमन में दीदावर पैदा ।।

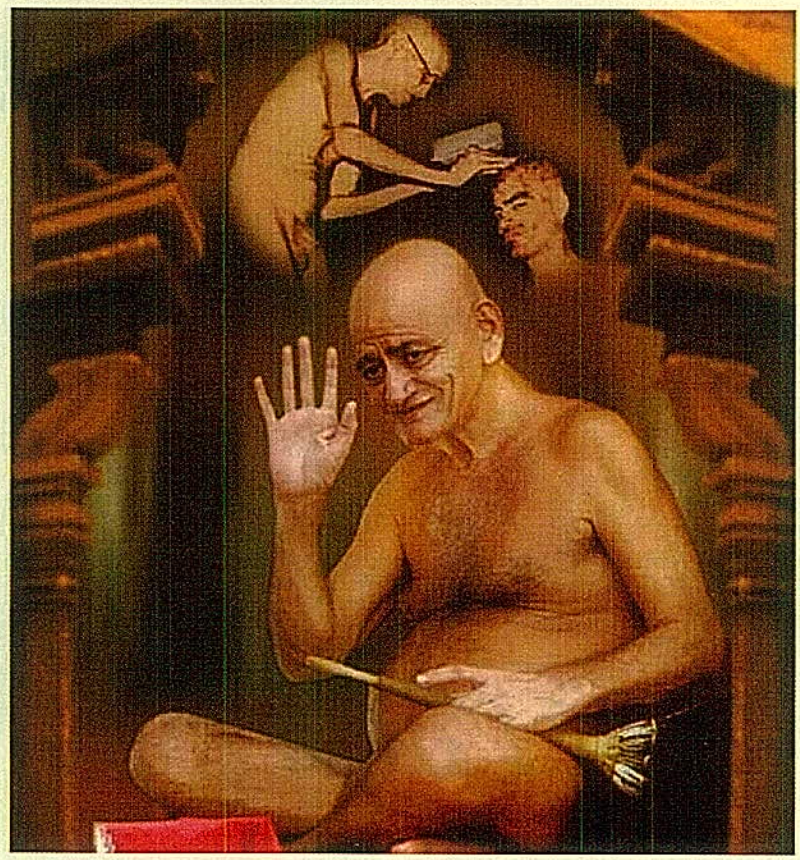

किसी शायर का यह शेर आचार्यश्री विद्यासागरजी पर बड़ा ही सटीक है। दिगम्बर जैन धर्म की अनादिकालीन परम्परा में दिगम्बर साधु का स्वरूप, उनकी चर्या, उनका आचार–विचार आदि सभी पर विस्तृत वर्णन देखने को मिलता है । वर्तमान युग उस वर्णन को पढ़कर अपनी बुद्धि, विवेक से मूल्यांकन करता है, सबके अपने–अपने तरीके होते है।

वस्तु का स्वरूप समझाने वाले जैन दर्शन में सबसे पहले कहा जाता है कि सबसे पहले स्वयं को देखों, स्वयं को समझो, तभी आप इस जैन दर्शन व संसार को समझ सकते हो ।

10 अक्टूबर 1946 शरद पूर्णिमा की रात्रि में जन्में विद्याधर के बारे में जब हम पढ़ते है तो हमें बड़ा आश्चर्य होता है, वर्तमान समय का ऐसा परिवार जहां एक को छोड़ सारे के सारे दिगम्बर पथ के अनुयायी हुए हो, ऐसा देखने–सुनने को नहीं मिलता।

कन्नड़ भाषी 'विद्याधर' वास्तव में विद्याधर थे जिन्होंने अपने गुरु आचार्य ज्ञानसागरजी के कथन "पढ़ लेना, तुम भी पढ़ लेना, अभी तक पढ़ने वाले तुम्हारे जैसे कई ब्रह्मचारी और भी आये है, लेकिन सब पढ़कर चले गए रुका कोई नहीं।"

अपने गुरु का यह कथन सुनकर जीवन में कुछ करने निकले विद्याधर ने अपना संकल्प इस तरह व्यक्त किया कि "मैं आज से जीवन पर्यन्त वाहन/यान आदि सभी आवागमन के साधनों का त्याग करता हूँ, जितना चलूंगा अब आपकी आज्ञा से आपके पीछे–पीछे ही चलूंगा। अपनी कृपा बनायें।"

इतने कठोर संकल्प को दृढ़ निश्चय के साथ सहज में ले लेने वाले आज संत शिरोमणि आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज लोकपूज्य है। जैन दर्शन की आन–बान–शान है। यह संकल्प न केवल गुरु के प्रति निष्ठा को प्रदर्शित करता है। बल्कि यह संदेश देता है कि यदि जीवन में कुछ भी पाना है तो गुरु शरण में समर्पित हो जाओ, सौदेबाजी मत करो। समर्पण में इतिहास बनता है, सौदेबाजी समाप्त कर देती है ।

1969 से नमक, बूरा, शक्कर त्याग दिया

स्वर्ण के समान चमकने वाले गुरुवर आचार्यश्री दीक्षा के एक वर्ष बाद ही नमक, बूरा, शक्कर के त्यागी हो गए। यह उनकी दिगम्बरत्व के प्रति निष्ठा व समर्पण का परिचायक है । आपने 1985 में चटाई का भी त्याग कर दिया साथ ही 1994 में सभी वनस्पतियों को त्याग कर एक अलौकिक संत बन गए। आपको देखकर अनेक श्रावक–श्राविका बिना कहे त्याग करने को आतुर हो जाते है। आपकी मधुर मुस्कान के दीवाने युवा अपना सब कुछ (संसार की भाषा में) छोड़कर अपना ही सब कुछ (आत्मज्ञान) पाने को दिगम्बरत्व स्वीकार कर लेते है ।

साहित्य के शिरोमणि है आचार्यश्री

75 से अधिक समर्थ कृतियों को जन्म देने वाले आचार्यश्री साहित्य के शिरोमणि है, कन्नड़, मराठी, बंगला, संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, हिन्दी, अंग्रेजी के कुशल अध्येता ने जब

कलम चलाई तो जो निकला वह नवनीत आज भी जन–जन के अधरों पर है व आचार्य विद्यासागरजी महाराज ऐसे पहले आचार्य है जिनके साहित्य, व्यक्तित्व, कृतित्व पर 125 से अधिक पी.एच.डी. की गई है।

आपके द्वारा रचित 'मूकमाटी' महाकाव्य तो विश्वविद्यालयों के कोर्स में सम्मिलित होकर अनेक छात्रों का प्रिय विषय रहा है। वे मूकमाटी में कहते है 'राख' का उलट 'खरा' होता है व 'राही' का उलट 'हीरा' होता है। ये उनकी अभिव्यक्ति अनेकजनों को 'खरा' बनाने व 'हीरा' बनाने की ओर अग्रसर करती है ।

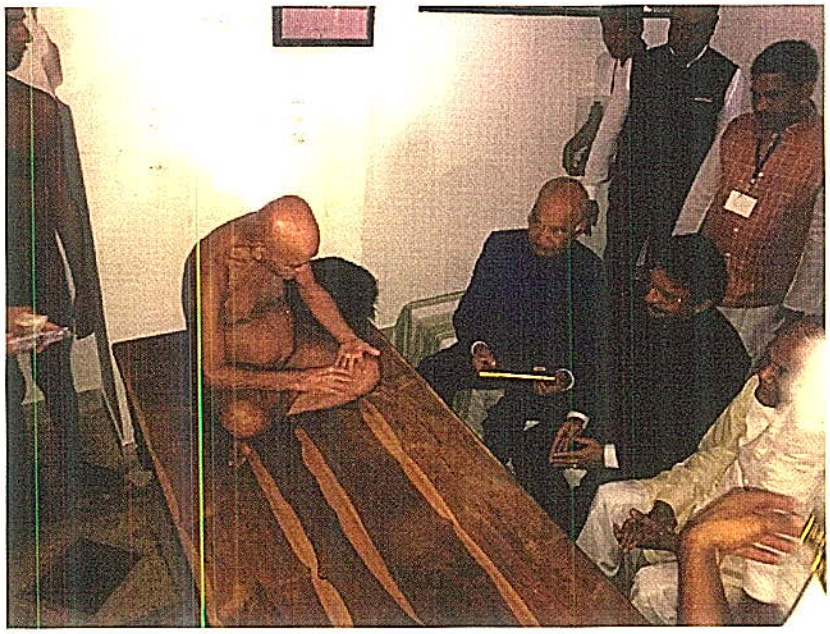

राष्ट्रपति श्री रामनाथ कोविंद से चर्चारत आचार्य श्री

बुन्देलखण्ड के जन–जन में विद्यासागर

आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज की प्रिय भूमि बुन्देलखण्ड व मध्यप्रदेश ही रही है। आचार्यश्री से जब पूछा गया कि आप बुन्देलखण्ड में क्यों ज्यादा रहते है तो उन्होंने कहा कि आप अपनी दुकान कहाँ खोलना चाहेंगे तो उत्तर आया कि जहां ग्राहक ज्यादा हो तो आचार्यश्री ने कहा कि बुन्देलखण्ड में हमारे ग्राहक ज्यादा है इसलिए हमें बुन्देलखण्ड प्रिय है। बुन्देलखण्ड के प्राचीन तीर्थ द्रोणगिरि, नैनागिरिजी, आहारजी, पपौराजी, कुण्डलपुर आदि ऐसे तीर्थ है जो घनघोर जंगल में है । आचार्यश्री की पसंदीदा जगह थी नैनागिरिजी की सिद्धशिला को 'मूकमाटी' पूर्ण कराने का सौभाग्य प्राप्त है । प्रकृतिप्रिय आचार्यश्री के सबसे ज्यादा शिष्य आज भी बुन्देलखण्ड के ही है । जिन्होंने आचार्यश्री के प्रति अपना सब कुछ समर्पित किया है। ग्राम–ग्राम, गली–गली जैन जैनेत्तर समाज में आचार्यश्री की एक मुस्कान के पीछे बुन्देलखण्ड दीवाना बना हुआ है ।

मांस निर्यात विरोध व गौशाला के प्रेरक

मांस निर्यात के विरोध में आवाज उठाकर सबसे पहले पशुओं के संरक्षण की आवाज आचार्यश्री ने पुरजोर तरीके से उठाई व गौशालाएं खोलने का आह्वान किया। देश में सैकड़ों गौशालाएं आचार्यश्री के आह्वान पर संचालित है।

मध्यप्रदेश सरकार ने तो आचार्यश्री विद्यासागर गौ संवर्धन बोर्ड का गठन किया है । जिसके तहत गायों का संरक्षण किया जाता है । गरीबी रेखा के नीचे जीवन यापन करने वाले परिवारों को अनुदान व गाय प्रदान की जाती है ।

बीनाबरहा में ''शांतिधारा'' दुग्ध योजना एक महत्वपूर्ण योजना है। आचार्यश्री ने जहां मांस निर्यात का विरोध किया वहीं उसके उपाय बताते हुए गायों के संरक्षण के कारगर उपाय प्रस्तुत किये जो लाखों–करोड़ों जीवों के प्रति करुणा का कारण है । धन्य हैं ऐसे युग प्रवर्तक आचार्यश्री।

संस्कारों के साथ हिन्दी के हिमायती

बच्चों में संस्कृति के संस्कार प्रवाहमान हो इस हेतु प्रतिभास्थली जैसी संस्थाओं का गठन व 'इण्डिया नहीं भारत कहो' हिन्दी बोलो, हिन्दी के संरक्षण के प्रयास आचार्यश्री की दूरगामी सोच को प्रदर्शित करती है ।

हथकरघा से अहिंसा का शंखनाद

आचार्यश्री ने हथकरघा उद्योग को प्रोत्साहित कर अहिंसा से आजीविका को जोड़ा है, आज अहिंसा का शंखनाद हथकरघा उद्योग से कर भारतवर्ष को एक नई दिशा प्रदान की है जो संपूर्ण देश में अच्छा प्रतिसाद दे रही है । आज इस योजना से हजारों हाथ जुड़े है व तेजी से इस अहिंसक योजना को आमजन स्वीकार कर रहे है । ऐसे युग प्रवर्तक आचार्य भगवन ने अब तक 120 मुनिदीक्षा, 172 आर्यिका दीक्षा, 58 ऐलक दीक्षा, 64 क्षुल्लक दीक्षा, 03 क्षुल्लिका दीक्षा, कुल 443 दीक्षा प्रदान की है, सैकड़ों बाल ब्रह्मचारी भैया, दीदी, प्रतीक्षा में है । लाखों श्रावकों ने अनेक प्रतिमा धारण की है, त्याग मार्ग को स्वीकार किया है । ऐसे आचार्यश्री की कुछ प्रेरक कथन जो हमें ।

✓ **जब तक 'देह' के प्रति 'नेह' है तब तक 'गेह' भी है, जब तक 'नेह–देह–गेह' है तो संदेह भी है, और जब तक 'संदेह'**

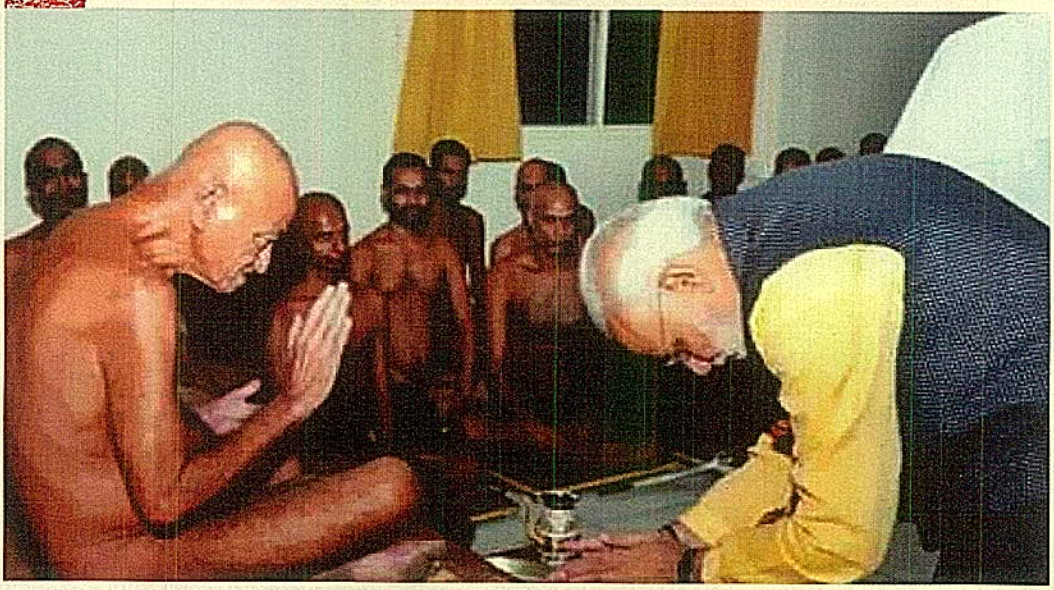

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी आचार्य श्री को नमन करते हुए

है तब तक 'विदेह' नहीं हो सकता ।

- ✓ 'वेतन' वाले 'वतन' की ओर कम ध्यान दे पाते हैं, और 'चेतन' वाले 'तन' की ओर कब ध्यान दे पाते है ।
- ✓ तुम दिन रात बच्चों का ही नाम लेते रहते हो, इसलिए बच्चों वाले ही बने रहते हो ।
- ✓ एक में 'शांति' है अनेक में 'अशांति' हैं, इसलिए एक (आत्मा) का ही चिंतन करें ।
- ✓ 'मिथ्या दृष्टि' की भक्ति का लक्ष्य 'पद प्रतिष्ठा' होती है ।
- ✓ 'सम्यकदृष्टि की भक्ति का लक्ष्य 'मुक्ति' होती है ।
- ✓ एक किनारे से दूसरे किनारे पर जाना आसान है लेकिन मझधार से किनारे पर जाना बहुत मुश्किल है ।
- ✓ विवेकी खड़े–खड़े घर से निकल जाते है, और अविवेकी (अज्ञानी) को निकाल दिया जाता है ।
- ✓ धर्म की शुरुआत मंदिर से नहीं घर से होती है ।
- ✓ बड़ी विडम्बना है, पशुओं के अंदर तो इंसानियत आ रही है, लेकिन मनुष्यों में पशुता आ रही है ।
- ✓ भाले ही उपवास–एकासन न हो सके तो मत करना लेकिन किसी प्राणी के प्रति दुराभाव नहीं करना ।

जगत के उपकारी संत के रुप में वे आज संत शिरोमणि है, अनेक उपाधियॉ उनके आगे इसलिए बौनी हो जाती है क्योंकि वे मानते है कि ये उपाधियां 'व्याधियॉ' है। अपने गुरु द्वारा प्रदत्त उपाधि के साथ न्याय करते हुए वे अपने आचार्य पद को इतना प्रतिष्ठित किए हुए है कि किसी के मुख से यदि 'आचार्यश्री' शब्द निकले तो मन–मस्तिष्क में आचार्यश्री विद्यासागरजी की छवि ही ध्यान आती है, ऐसे महान आचार्य का चातुर्मास विगत वर्ष जब हमारे प्रदेश की राजधानी भोपाल में हुआ तो म.प्र. के मुख्यमंत्री श्री शिवराजसिंह चौहान सहित उनका पूरा मंत्रिमण्डल उनकी अगवानी में कई किलोमीटर नंगे पैर कमण्डल थामे चला और भोपाल का वह चातुर्मास इतिहास के स्वर्णाक्षरों में लिखा गया जब इस देश के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी अपने अनेक मंत्रियों के साथ आचार्य संघ के दर्शन को पहुंचे थे ।

उनका मुखमण्डल देखकर आज भी अनेक प्रश्नों का समाधान हो जाता है । ऐसे युग प्रमुख आचार्य विद्यासागरजी अपने जीवन के 71 वर्ष में से 50 वर्ष दिगम्बर मुनि के रुप में पूर्ण कर रहे है । हमारा यह सौभाग्य है कि हम उस युग में जन्में है जिससे हमें प्रत्यक्ष रुप से उनका आशीर्वाद प्राप्त हुआ है।

यह विद्यासागर युग है और पूरा देश उनकी मुनिदीक्षा की स्वर्णिम संयम यात्रा को मना रहा है। ऐसे गुरुवर के रत्नत्रय की कुशलता की कामना के साथ त्रिबार विनय पूर्वक नमोस्तु करते हुए मन में अपार हर्ष का अनुभव हो रहा है। अंत में आचार्यश्री का एक कथन

"दुनिया को समझाना बहुत आसान है
अपने आपको समझाना बहुत कठिन है।"

★★★★

संयम–साधना–स्वाध्याय की साक्षात् त्रिवेणी आचार्य श्री वर्द्धमानसागर जी महाराज

–डॉ0 सुनील जैन 'संचय', ललितपुर

भारतीय संस्कृति श्रमण संस्कृति के बिना अधूरी है। हमारा देश अनेक ऋषि, मुनियों और त्यागियों का देश है। इस देश का गौरव इन्हीं की महानता के कारण है। श्रमण संस्कृति को वर्तमान में परम पूज्य आचार्य श्री वर्द्धमानसागर जी महाराज अपनी त्याग–तपस्या और साधना से गौरवान्वित कर रहे हैं। पूज्य आचार्यश्री के पास एकबार भी जो पहुचा, हमेशा के लिए वह गुरुदेव से जुड़ जाता है। आपकी सोच जैन समुदाय को एक नया मुकाम दिलाने की रहती है।

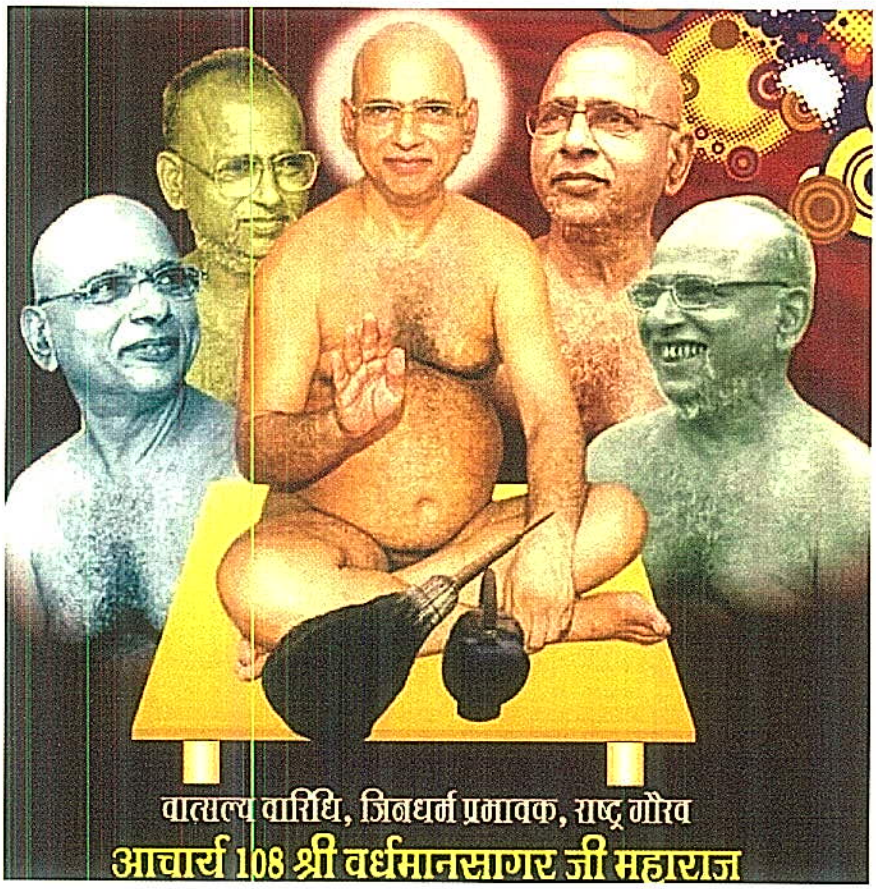

हाल ही में आपके पावन सान्निध्य में गोम्मटेश बाहुबली भगवान का महामस्तकाभिषेक भारी श्रद्धा और अपार जनसैलाब के बीच सम्पन्न हुआ। आपका गोम्मटेश बाहुबली भगवान के प्रति विशेष लगाव रहता है इसलिए आप इस बार भी महामस्तकाभिषेक के 12 वर्षीय पावन आयोजन में अपना मंगल सान्निध्य प्रदान करने श्रवणबेलगोला की पावन भूमि पर पहुंचे और इस महामहोत्सव को जन–जन तक पहुंचाने में अपनी अहम भूमिका का निर्वाह किया। श्रवणबेलगोला श्रीक्षेत्र के भट्टारक परम पूज्य कर्मयोगी स्वस्तिश्री चारूकीर्ति जी स्वामी के निर्देशन में यह विशाल आयोजन अपनी पूरी गौरव गरिमा और महिमा के साथ सम्पन्न हुआ। चारूकीर्ति जी स्वामी के विशाल हृदय ने इस आयोजन में सभी को समाहित करने का पूरा प्रयास किया। पूरे विश्व में इस विशाल, विराट आयोजन की अनुगूंज सुनायी दी, यह सब पूज्य आचार्यश्री के आशीर्वाद और कर्मयोगी चारूकीर्ति जी स्वामी के कुशल निदेशन से ही संभव हो पाया है।

पूज्य आचार्यश्री ने अपने दीक्षित जीवन में रत्नत्रय की सजग प्रहरी की तरह आराधना के साथ–साथ जैन साहित्य के प्रचार–प्रसार में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। पूज्य आचार्यश्री के आसन की दृढ़ता, लेखन में एकाग्रता, मनन–चिंतन का स्थैर्य प्रत्येक परिस्थिति में धैर्य, गुरुजनों के प्रति अगाध निश्चल भक्ति, धार्मिकजनों में वात्सल्य, सहिष्णुता, समता, निरभिमानता, दृढ़ संकल्पशक्ति आदि ऐसे विशिष्टगुण हैं जो स्पृहा जमाते हैं। धर्मसभा हो या विद्वत् गोष्ठी वे सभा में सबके विचारों को सुनते रहते हैं। जब उनका अवसर आता है तो प्रवचन में सबके विचारों का भाषण का विषय उनकी समीक्षा के दायरे में आ जाता है। पूज्य आचार्यश्री संयम–साधना–स्वाध्याय की साक्षात त्रिवेणी हैं। उनके कंठ में सरस्वती का वास ही है। वर्तमान् का विद्वत् जगत् पूज्य आचार्यश्री के सिद्धांत, अध्यात्म, ज्ञान के प्रति सहज नम्रीभूत है। अगाधज्ञान से पूरित आपके प्रवचन हृदयग्राही, आगमानुमोदित, सहज और सरल होते हैं।

आपकी विद्वता एवं साधुता की सुगंध सर्वत्र फैली हुई है। आपकी कठोर चर्या एवं ज्ञान की प्रकर्शता से जन–गण–मन लाभान्वित हुए हैं।

जन्म : आचार्य श्री 108 वर्द्धमानसागर जी महाराज जिनका बचपन का नाम यशवंत था, का जन्म 18 सितम्बर 1950 भाद्रपद शुक्ला 7 को मध्यप्रदेश के सनावद नगर में हुआ था। मनोरमा देवी की कोख से 13वें पुष्प के रूप में जन्मे यशवंत।

बाल्यावस्था में ही मां की ममता का वियोग हो जाने पर पिता कमलचंद्र जी ने यशवंत को पाला पोसा और बढ़ा किया। 'होनहार बीरबान के होत चीकने पात' कहावत के अनुसार यशंवत जी बचपन से कुशाग्र बुद्धि, करूणाशील, न्यायप्रिय, सत्यवादी, निर्भीक एवं वैराग्यवान थे। अपने से बड़े जनों का आदर व सम्मान करते थे।

जैन धर्म के प्रति रुचि : बाल्यकाल से ही मुनियों के प्रति इनकी श्रद्धा भक्ति थी, वे मुनियों की सेवा–वैयावृत्ति करते, उन्हें आहार भी देते थे। वे बचपन से ही वैरागी थे, उन्होंने सांसारिक प्रपंचों में फंसना कभी मन से स्वीकार नहीं किया, शौक–फैशन, भोग–विलासी जिंदगी से कोसों दूर थे। 14 वर्ष की बाल्यावस्था में यशवंत ने सर्वप्रथम आचार्य श्री महावीरकीर्ति जी तथा विमलसागर जी महाराज के दर्शन किये। तत्पश्चात 1965 में जीवन को बदलने वाली घटना का सूत्रपात हुआ। आर्यिका इन्दुमति माता जी, आर्यिका सुपार्श्वमती माता जी एवं आर्यिका विद्यामती माता जी इन त्रय आर्यिका रत्न का सनावद नगर में चातुर्मास हुआ। आर्यिका सुपार्श्वमती जी के वात्सल्य व्यवहार समता और विलसित आनंद तथा अदभुत ज्ञान ने बालक यशवंत को अभिभूत कर दिया। माता जी के द्वारा कहे गये शब्द 'वैराग्य मार्ग पर बढ़ोगे तो तुम्हें भी ऐसा ही परम आनंद मिलेगा' साधे यशवंत के हृदय में उतर गये और यहीं से शुरू हुयी वर्तमान के वर्द्धमान की यात्रा।

वैराग्य उत्पन्न और ब्रह्मचर्य व्रत : 1967 में गणिनी आर्यिका रत्न ज्ञानमती माताजी ससंघ का चातुर्मास हुआ सनावद में। बालक यशवंत की धर्म रुचि तथा वैराग्य भावना को आर्यिका माता जी ने भलीभांति पढ़कर वैराग्य का बीज मंत्र दिया। अगले ही वर्ष सन् 1968 में यशवंत कुमार ने आचार्य श्री विमलसागर जी महाराज से आजीवन ब्रह्मचर्य व्रत को ग्रहण किया। कुछ दिन वापस घर में रहकर यशवंत कुमार पहुंच गये चारित्र चक्रवर्ती आचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज की परम्परा के द्वितीय पट्टाचार्य आचार्य श्री शिवसागर जी महाराज के संघ में और पठन पाठन, अध्यापन करने लगे। आर्यिका ज्ञानमती माता जी के

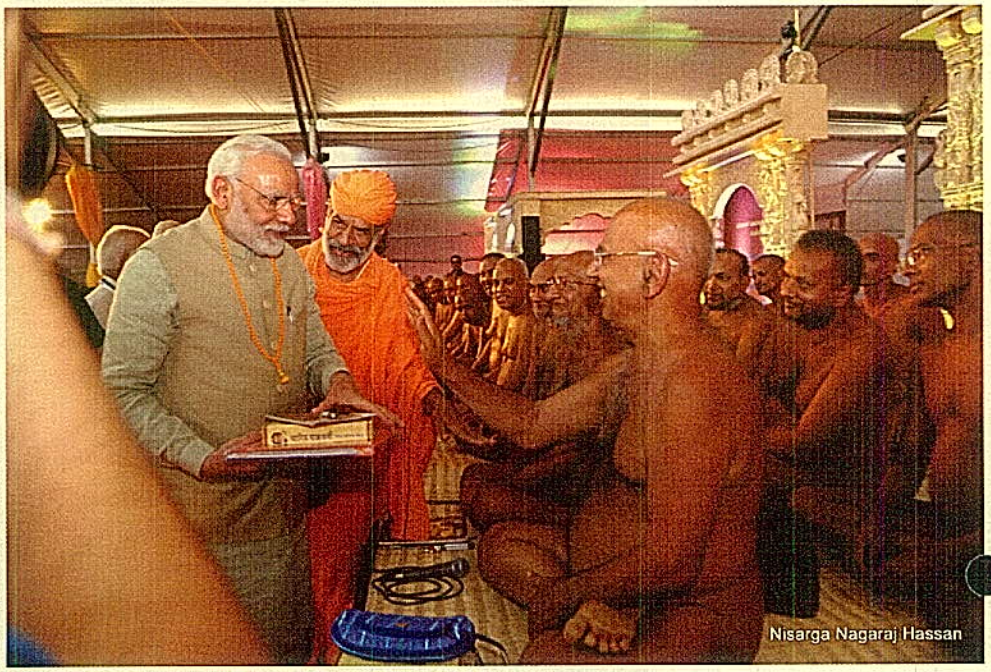

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी आचार्य श्री से चर्चारत

चरण सान्निध्य में । यथानाम तथा गुण। यशवंतकुमार संघ में सबके चहेते थे एवं उनकी सादगी निर्मलता, सौहार्दपूर्ण व्यवहार से सब उन्हें स्नेह करने लगे।

मुनि दीक्षा : आचार्य श्री शिवसागर जी महाराज की समाधि के पश्चात तृतीय पट्टाचार्य आचार्य श्री धर्मसागर जी महाराज के आचार्य पदारोहण के दिन फाल्गुन शुक्ल अष्टमी को सन् 1969 में राजस्थान की पावन भूमि श्री महावीरजी में यशंवत कुमार समेत कुल 11 लोगों की दीक्षाएं संपन्न हुई। गुरू ने यशवंत कुमार का नामकरण किया मुनि श्री वर्द्धमानसागर।

मन की दृढ़ता : दीक्षा गुरू तथा समस्त संघ के साथ विहार करते हुए मुनि वर्द्धमानसागर जी पहुंचे जयपुर के खानियां जी। स्वास्थ्य की प्रतिकूलता के कारण बेहोशी आ गयी और जब होश आया तो पाया कि नेत्रों की ज्योति जा चुकी थी, आचार्य श्री धर्मसागर जी ने एलोपेथी दवाई का उपयोग मुनि अवस्था में करने की आज्ञा नहीं दी। वर्द्धमानसागर जी को पूज्यपाद स्वामी द्वारा की गई शांति भक्ति 'न् स्नेहा छरणम प्रयन्ति भगवन' का स्मरण आया और पूरे संघ सहित बैठ गये भगवान चंद्रप्रभ के चरणों में शांति भक्ति करने। जो स्वयं निज अंतरात्मा की ज्योति जलाकर सम्पूर्ण विश्व को प्रकाशित करने वाले थे उनकी बाहरी नेत्र ज्योति को फिर कोई कैसे रोक सकता था। तीन घंटे की प्रार्थना के पश्चात् चमत्कार हुआ, प्रभु भक्ति और मन की दृढ़ता तथा गुरु

के आशीर्वाद से तत्क्षण नेत्र ज्योति प्रकट हो गई।

आगम का गहन अध्ययन : विद्यागुरु कोलकाता गौरव आचार्य कल्पश्रुत सागर जी साथ संघ में रहकर धीरे धीरे सिद्धांत शास्त्रों आगम ग्रंथों आदि का अध्ययन किया। किशनगढ में आचार्य श्री धर्मसागर जी महाराज के साथ प्रवेश के वक्त आचार्यश्री ज्ञानसागर जी महाराज तथा मुनि श्री विद्यासागर जी महाराज का स्वयं एक किलो मीटर चलकर आकर परम्परा के आचार्य की अगवानी करना और उन्हें उच्च आसन पर विराजमान करने का दृश्य मुनि वर्द्धमानसागर जी के हृदय पटल पर अंकित हो गया। धीरे धीरे मुनि श्री वर्द्धमानसागर जी आचार्य श्री धर्मसागर जी और आचार्य कल्पश्रुतसागर जी महाराज के चरण सान्निध्य में रहकर दीक्षा संस्कार ज्योतिष प्रवचन आदि में निपुणता को प्राप्त होने लगे।

आचार्य धर्मसागर का समाधिमरण और आचार्य पद: पलपल वर्धित वर्द्धमान को देखकर गुरु धर्मसागर जी भी चहेरे पर मुस्कान लिये हर्षित होते हैं। कुछ वर्ष यों ही व्यतीत होते गये और सहसा वर्द्धमानसागर जी सहित सम्पूर्ण जैन जगत पर जैसे वज्रपात हो गया। सीकर चातुर्मास के दौरान आचार्य श्री धर्मसागर जी महाराज की समाधि हो गयी। आचार्य श्री धर्मसागर जी महाराज की समाधि के पश्चात पट्टाचार्य श्री अजितसागर जी महाराज के आमंत्रण पर मुनि श्री वर्द्धमानसागर जी 20–21 साधुओं के संघ सहित पहुंच गये, पिता तुल्य आचार्य श्री के चरणों में भीण्डर करीब तीन साल के समीप्य में आचार्य श्री ने गूढ रहस्यों सहित बहुत सारी ज्ञान की बातों से मुनि श्री वर्द्धमानसागर जी को अवगत कराया। मुनि श्री वर्द्धमानसागर जी की तीक्ष्ण बुद्धि, समर्पण भाव, निर्मल आगमोक्त आचरण की प्रवृत्ति, गुरुजनों के प्रति अनन्य भक्ति देव शास्त्र गुरू के प्रति असीम श्रद्धा संघस्थजनों के साथ वात्सल्यपूर्ण व्यवहार , हृदय में संघ के साथ उत्थान की भावना, युवा अवस्था, ऐसे कुल मिलाकर सभी आयामों से ओजस्वी व्यक्तित्व को परखते हुए आचार्य श्री अजितसागरजी महाराज ने अपनी अस्वस्वथता को देखकर लिखित पत्र द्वारा यह आदेश दिया कि मेरी समाधि के पश्चात मैं मुनि श्री वर्द्धमानसागर जी महाराज को आचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज की अक्षुण्ण परंपरा का आचार्य नियुक्त करता हूं। और फिर आचार्य श्री की समाधि के पश्चात 24 जून 1990 को आषाढ़ शुक्ल 2 को पारसोला में लाखों जन समूह की उपस्थिति में वर्द्धमानसागर जी को आचार्य शांतिसागर जी महाराज की अक्षुण्ण परंपरा के पट्ट पर बैठाया गया। आचार्य पट्ट के संस्कार किये। आचार्य श्री पुष्पदंत सागर जी महाराज ने । और फिर यहां से शुरू हुयी वर्तमान के वर्द्धमान की जन मानस को वात्सल्य रूपी गागर में भिगोने की यात्रा।

धर्म प्रभावना : आचार्य श्री वर्द्धमानसागर जी महाराज ने अपने संयमी जीवन में ग्राम–ग्राम, नगर–नगर पद विहार करते हुए अपनी पद रज से भारत वर्ष के कई प्रांतों को पवित्र किया है। कर्नाटक, महाराष्ट्र, पश्चिम बंगाल, उत्तरप्रदेश, मध्यप्रदेश, राजस्थान, दिल्ली, बिहार, झारखण्ड आदि प्रान्तों में जिनधर्म की अभूतपूर्व प्रभावना की। अनेक निर्वाण क्षेत्रों, अतिशय क्षेत्रों की यात्रा की, अनेक पंचकल्याणक कराये। मुनि, आर्यिका, क्षुल्लक, क्षुल्लिका को दीक्षा देकर चतुर्विध संघ की स्थापना की।

विद्वानों के प्रति आचार्यश्री का परम वात्सल्य स्पष्ट झलकता है। आचार्यश्री को विद्वानों के प्रति विशेष अनुराग है, वे मानते हैं कि जिनवाणी के प्रचार– प्रसार के लिए जो कार्य दिगम्बर मुद्रा में साधु नहीं कर सकता है वह विद्वान कर सकता है। मेरा परम सौभाग्य रहा है कि मुझे पूज्य आचार्यश्री के सान्निध्य में पपौरा जी और कुण्डलपुर, किशनगढ में आयोजित संगोष्ठी में संयोजन का दायित्व प्राप्त हुआ और इस दौरान आचार्यश्री से निकटता से जुड़ने का जो अवसर मिला वह हमारे लिए बहुत बड़ी उपलब्धि है और अपना परम सौभाग्य मानता हूं जो ऐसे महान संत सान्निध्य में मुझे मां जिनवाणी के प्रति कुछ करने का सुअवसर मिला। आचार्यश्री के निकट जब भी कोई विद्वान दर्शन के लिए पहुंचता है तो चाहे वह युवा विद्वान हो या वरिष्ठ विद्वान पूरा वात्सल्य आचार्यश्री का मिलता है। आचार्यश्री का हमेशा कहना रहता है कि विद्वान आचरण निष्ठ होना चाहिए।

आचार्यश्री के बारे में जितना लिखा जाय कम है, हमारी इस नन्ही सी कलम में वह दम–खम कहां जो एक महान तपस्वी की जीवनधारा को कुछएक कागज के पन्नों में समेट सकें।

धरती का कागज करूँ, करूँ समुद्र पानी सेहाई।
फिर भी गुरू गुण कहे न जाये, यह गुरू महिमा बताई।।

पूज्य आचार्यश्री के आचार्य पदारोहण दिवस के पावन अवसर पर यही भावना भाता हूं कि तपोवर्धन एवं स्व–पर कल्याण के निमित्त आप सदा स्वस्थ रहें और दीर्घायु होकर जैनधर्म की असीम प्रभावना करें और आशीर्वाद प्रदान करते रहें, जिससे हम अपने जीवन को ज्योतिर्मय बना सकें।

जैन अतिशय क्षेत्र बहोरीबन्द वैभव

डॉ. भागचन्द जैन 'भागेन्दु'

अवस्थित-मध्य प्रदेश के कटनी जिला (पहिले जबलपुर जिला) में कटनी-रीठी-सिहोरा मार्ग पर अवस्थित बहोरीबन्द भारतवर्ष की तीनों-वैदिक, जैन और बौद्ध संस्कृतियों का सुप्रसिद्ध प्राचीन केन्द्र है।

23, 35 उ; 80, 00 पू.; सस्. ऊँ 433 मीटर पर अवस्थित इस स्थान का नाम यहाँ विद्यमान अनेक बंधानों के कारण बहोरीबन्द पड़ा। यह जबलपुर से उत्तर में 64 किमी. दूर, और सिहोरा से उत्तर पश्चिम में 24 किमी. दूर कैमूर पर्वत श्रेणियों की उपत्यका में स्थित है। पश्चिम मध्य रेल्वे की कटनी-बीना ब्रांच लाइन पर स्थित सलैया रेल्वे स्टेशन यहाँ से 27.8 किमी. दूर है, और कटनी-इटारसी मुख्य लाइन पर स्थित सिहोरा रोड रेल्वे स्टेशन इस स्थान से 27.2 किमी. दूर है। यह स्थान दोनों रेल्वे स्टेशनों से मोटर मार्ग से जुड़ा हुआ है। श्री अलेग्जेण्डर कनिंघम इसे ग्रीक इतिहासकार टोलेमी द्वारा उल्लेखित थोलोवाना या थोलवन मानने में अपनी सहमती प्रकट करते है।

परिवेश: बहोरीबन्द से 4.8 किमी. दूर रूपनाथ नामक स्थान में सम्राट अशोक के द्वारा ईसापूर्व तीसरी शताब्दी के शिलोत्कीर्ण धर्मादशों में से एक लघु शिलालेख मौजूद है।

बहोरीबन्द के उत्तर में 3.2 किमी. दूर तिगवाँ ग्राम में पुरातात्त्विक महत्त्व के अवशेषों का एक बहुमूल्य भण्डार है। यहाँ तीस से भी अधिक मंदिर थे। भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय के वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग के द्वारा ऐतिहासिक स्थानावली नामक विशाल और महत्वपूर्ण ग्रन्थ का प्रकाशन सन् 1969 में हुआ है। यह ग्रन्थ इतिहास और भूगोल की दृष्टि से बहुत महत्त्व रखता है। इस ग्रन्थ के रचयिता है- श्री विजयेन्द्रकुमार माथुर, वरिष्ठ अनुसन्धान अधिकारी, वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग, शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली। इस ग्रन्थ के पृष्ठ 399-400 पर तिगवाँ के विषय में उल्लेख है कि- (यह) छोटा-सा ग्राम है, जो गुप्तकाल में

जैन सम्प्रदाय का केन्द्र था। एक अभिलेख से ज्ञात होता है कि कन्नौज से आये हुए एक यात्री उभदेव ने पार्श्वनाथ का एक मंदिर इस स्थान पर बनवाया था जिसके अवशेष अभी विद्यमान है। यह मंदिर अब हिन्दु मंदिर के समान दिखाई देता है। यहाँ के खण्डहरों में कई जैन मूर्तियाँ भी प्राप्त हुई है। इस मंदिर का वर्णन करते हुए रायबहादुर (स्व.) डॉ. हीरालाल ने लिखा है कि- यह प्राय: डेढ़ हजार वर्ष प्राचीन है। यह चपटी छत वाला पत्थर का मंदिर है।

मूलत: यह 12 फुट 9 इंच का वर्गाकर छोटा मंदिर था जिसकी छत गुप्तशैली के अनुसार सपाट बनी थी। इस मंदिर में गुप्तशैली की विभिन्न अन्य विशेषताएँ भी विद्यमान है।

सम्प्रति इस मंदिर को कंकाली देवी के मंदिर के नाम से जाना जाता है। जबलपुर ज्योति में रायबहादुर डॉ. हीरालाल ने लिखा है कि- इस मंदिर की दूसरी ओर की दीवाल में जैनी तीर्थंकर पार्श्वनाथ की मूर्ति खुदी है। इससे जान पड़ता है कि मूल में यह जैन मंदिर रहा होगा जिसे बाद में हिन्दु-देवालय बना लिया गया है।

इस मंदिर के निर्माणकाल के सम्बन्ध में श्री राखालदास बनर्जी का मत भी उल्लेखनीय है। इस मंदिर में वर्गाकार एक केन्द्रीय गर्भगृह है, जिसके सामने एक-छोटा मण्डप है, मण्डप के स्तंभों के शीर्ष भारत पर्सिपोलिस शैली में बने है जिससे यह मंदिर गुप्तकाल से पूर्व का जान पड़ता है।

यहाँ पर तथ्य विशेषत: उल्लेखनीय है कि अनेक पुरातत्त्वज्ञों-इतिहासकारों के अनुसार तिगवाँ का यह मंदिर जैन मंदिर रहा है। किन्तु कुछ इसे बौद्ध-मंदिर रहा होगा, ऐसा अनुमान करते है। वस्तुत: यह कथन उचित प्रतीत नहीं होता है। इस आलेख के लेखक का स्पष्ट मत है कि मंदिर का निर्माण तो बौद्ध युगीन मंदिर-वास्तु शिल्प से साम्य रखता है किन्तु पूर्वोक्त

आचार्य श्री ज्ञानसागर साधना केन्द्र – बहोरीबन्द

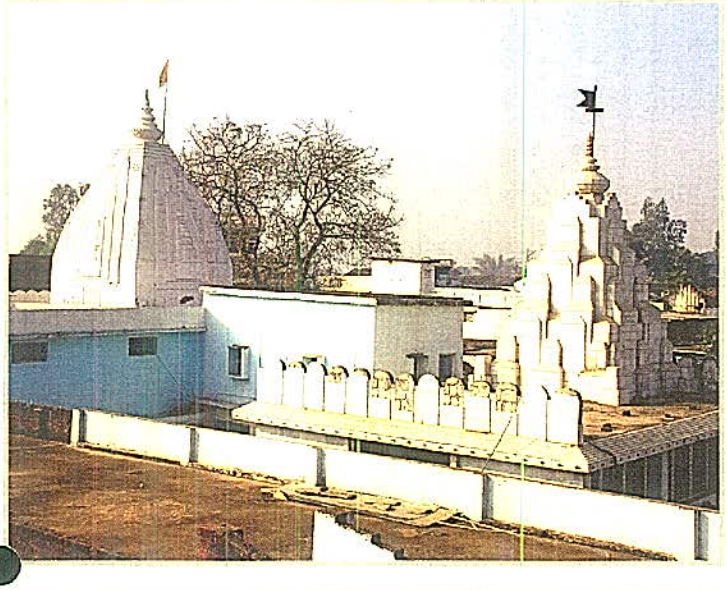

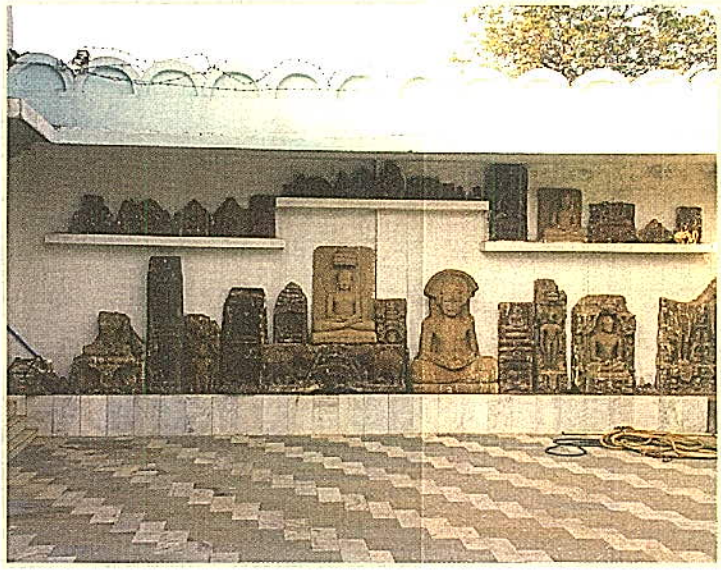

साक्ष्यों के परिप्रेक्ष्य में तिगवाँ का यह मंदिर अपने मूल रूप में जैन-मंदिर रहा है।

जैन तीर्थक्षेत्र बहोरीबन्द: प्राचीनकाल से बहोरीबन्द जैन धर्म, संस्कृति, कला, इतिहास और पुरातत्व का समृद्ध केन्द्र है। किन्तु कराल काल के चक्र प्रवाह में यहाँ का गौरव ध्वंसावशेषों में परिवर्तित हुआ। 1840 ई. के दशक में सिहोरा के तहसीलदार श्री पंचमलाल जैन ने बहोरीबन्द ग्राम के काजी हॉउस के निकट जमीन में लेटी हुई सोलहवें जैन तीर्थंकर भगवान शान्तिनाथ की भव्य और विशाल प्रतिमा को इंटों का एक स्तम्भनुमा टिकौना बनवाकर टिकवा दिया। ग्रामीण जनता उन्हें खनुआ देव के नाम से सम्बोधित करती और अपनी मनोकामनाओं की पूर्ति का अजूबा साधन मानती आ रही है। किन्तु वर्तमान उत्तुंग शिखरयुक्त भव्य जैन मंदिर में विराजमान होने से पूर्व वे अपनी बीमारी भूत-प्रेत आदि की बाधाओं तथा तरह-तरह के संकटों को दूर करने और मनोकामनाओं की सिद्धि हेतु इन खनुआदेव के विग्रह पर जूते-चप्पल आदि का प्रहार करते थे।

1953 ई. में इस लेखक ने इन्हें इसी स्थिति में देखा। लगभग इसी समय सिहोरा। के लब्धप्रतिष्ठ एडवोकेट श्री जयकुमार जैन के महामन्त्रित्व में एक क्षेत्रीय कमेटी का गठन हुआ। इस समिति में निकटवर्ती स्थानों के अनेक महानुभावों के साथ आदरणीय बाबा कल्यानदास जी ब्रह्मचारी ने अथक पुरुषार्थ और साधना करके बहोरीबन्द को वर्तमान कालीन जैन तीर्थक्षेत्र के रूप में विख्यात करने के लिए बहुविध सार्थक प्रयास किये। उनकी इस यात्रा में सर्वश्री जयकुमार वकील, धन्यकुमार जैन सिहोरा, स.सि. लम्पूलाल जी रीठी, सिं. रूपचन्द नेताजी बाकल, पं. मोहनलाल जी शास्त्री जबलपुर, पं. जगन्मोहनलाल शास्त्री कटनी, प्रो. सुरेन्द्रकुमार सिहोरा, सिं. धन्यकुमार रांधेलीय कटनी आदि के साथ प्रबुद्ध समाज का भरपूर योगदान और मार्गदर्शन उल्लेखनीय महत्त्व रखता है।

परम पूज्य सन्त प्रवर श्री गणेश प्रसाद जी वर्णी महाराज, मुनिवर श्री आदिसागर जी महाराज आदि अनेक साधु सन्तों के ससंघ समागम से स्फूर्त यह सांस्कृतिक वसुन्धरा प.पू.108 श्री आचार्य विद्यासागर जी महाराज ससंघ की मनोभावना पावन तीर्थस्थली है। इन सभी का ऊर्जस्वित् पावन सान्निध्य पाकर बहोरीबन्द क्षेत्र उत्तरोत्तर विकसित और समृद्ध हुआ।

सम्प्रति यहाँ विशाल परिसर में तीन दिगम्बर जैन मंदिर अवस्थित है। इनमें पाषाण से निर्मित 08 और धातुओं से निर्मित 13 तीर्थंकर मूर्तियाँ विराजमान हैं। पाषाण से निर्मित 08 मूर्तियों में से 03 कायोत्सर्गासन में देशी काले-भूरे रंग के देशी पाषाण से और 06 पद्मासन में सफेद संगमरमर से निर्मित हैं। धातु से निर्मित छोटी-बड़ी कुल 13 जिनबिम्ब है, जिनमें 01 बाहुबली की और 03 सिद्ध भगवान की है।

साथ ही चारित्र चक्रवर्ती 108 आचार्य श्री शान्तिसागर मुनिमहाराज के पीतल से निर्मित चरण एक युगल चिह्न हैं। इनके अतिरिक्त पीतल और ताम्बा धातुओं के बहुत से यन्त्र भी विराजमान हैं।

यहाँ 3 फीट 6 इंच ऊँचे एक देशी पाषाण स्तंभ में चारों ओर शान्तिनाथ भगवान की 32 मूर्तियां उत्कीर्ण हैं।

तीसरे मंदिर के मूलनायक भगवान महावीर हैं। यह मूर्ति 2 फीट 6 इंच ऊँची है और सफेद संगमरमर से निर्मित है।

बहोरीबन्द के मंदिर संख्या दो में विराजमान बाहुबली भगवान की मूर्ति देशी काले-भूरे पाषाण से निर्मित है। यह 5 फूट ऊँची और 2 फूट चौड़ी है।

दशमी शती ई. में ही (यहाँ के भगवान शान्तिनाथ के समय) निर्मित इस भव्य और मनोरम प्रतिमा पर माधवी लता आवेष्टित है। मस्तक के पीछे भामण्डल है। माथे पर छत्र के दोनों और गजराज उनका कलशाभिषेक कर रहे है। उनके नीचे दोनों और विद्याथर युगल माला धारण किये हुए उड रहे हैं। उनके नीचे दोनों और त्रिभंगी मुद्रा में मुकटधारी चँवरधारी सुन्दर रूप से निदर्शित है। चँवरधारियों के नीचे (कदाचित) ब्राह्मी ओर सुन्दरी अप अपनी सखि के साथ बाहुबली की दुर्द्धर तपस्या काल में उन पर आवेष्टित/आरुढ लता वल्लरियों आदि को जुदा कर रही है। उनके नीचे भक्तिपूर्वक सविनय कर-सम्पुट में कमल-मुकुट धारण किये हुए एक श्रावक (दायीं ओर) तथा श्राविका (बायीं ओर) अवस्थित है। पादपीठ पर सिंहासन के प्रतीक वनराज सिंह दोनों और अंकित हैं।

सम्प्रति कृत्रिम पर्वत की रचना कर बाहुबली की इस भव्य प्रतिमा को विराजमान किया गया है।

इस मंदिर में भगवान बाहुबली के अतिरिक्त देशी पाषाण से निर्मित तीसरे जैन तीर्थंकर भगवान सम्भवनाथ की कायोत्सर्ग सर्वतोभद्र प्रतिमा भी विराजमान है। इस पर चारों और सम्भवनाथ का मूर्त्यकन है।

बहोरीबन्द में एक पुरातत्त्व संग्रहालय भी निर्माणाधीन है। इस समय इसके एक कक्ष में 27 मूर्तिखण्ड संरक्षित-निदर्शित हैं। इनमें से 2 सिहोरा में और शेष 25 यहीं उत्खनन में प्राप्त हुए है। ये अवशेष समकालीन कला संस्कृति और इतिहास के परिचायक हैं।

श्रीमज् जिनेन्द्र बिम्ब पंचकल्याणक प्रतिष्ठा और गजरथ महोत्सव: बहोरीबन्द में 11 फरवरी 2002 ई. को श्री जिनबिम्ब प्रतिष्ठा और गजरथ महोत्सव बीसवीं शताब्दी के महान् सन्त परम पूज्य आचार्य श्री 108 विद्यासागर जी मुनि महाराज के प्रमुख शिष्य मुनिराज 108 श्री योगसागर महाराज, श्री 108 प्रसादसागर जी महाराज एवं श्री 108 प्रवचनसागर जी महाराज एवं अन्य साधु संघों से समागत 108 श्री नेमिसागर जी मुनिराज आदि के ससंघ सान्निध्य में भव्यतापूर्वक सम्पन्न हुआ। इस महोत्सव के प्रसंग से बहोरीमुख के बहुमुखी उत्तरोत्तर विकास और समृद्धि के द्वार समुद्घाटित हुआ।

बहोरीबन्द का शान्तिनाथ प्रतिमाभिलेख: बहोरीबन्द में 13 फुट 6 इंच (आसन सहित 15 फुट 6 इंच) ऊंची तथा 3 फुट 8 इंच चौड़ी सोलहवें जैन

तीर्थंकर शान्तिनाथ की दसवीं शताब्दी में श्याम वर्ण के देशी पाषाण से कार्योत्सर्ग आसन में निर्मित विशाल मूर्ति के पादपीठ में सात पंक्तियों में उत्कीर्ण ऐतिहासिक अभिलेख से ज्ञात होता है कि महासामन्ताधिपति गोल्हणदेव राठौड़ के समय में भगवान शान्तिनाथ के समर्पित एक भव्य जैन मंदिर का निर्माण किया गया था। यह शासक कलचुरि वंश के राजा गयकर्णदेव का सामन्त था।

बहोरीबन्द की शान्तिनाथ प्रतिमा के अभिलेख का पंक्तिबद्ध मूलपाठ निम्न प्रकार हैं:-

1- स्वस्तिश्री सं.10 (1000, 1010, 1060) फाल्गुन वदि 8, भौमे श्रीमद् गयाकर्णदेव विजयरा-

2. ज्य (ज्ये) राष्ट्रकूट कुलोद्भव महासामन्ताधिपति श्रीमद् गोल्हण देवस्य प्रवर्धमानस्य।।

3. श्रीमद् गोल्लापूर्वाम्नाये वेल्लप्रभाटिकाया मुरुकृताम्नाये तर्कतार्किक चूड़ामणि श्रीमान्

4. माधवनन्दिनामनुगृहीत: साधू श्री सर्व्वधर: तस्य पुत्र (त्रो) महाभोज: धर्मदानाध्ययन (ने) रत: तेनेदं का-

5. रितं रम्यं सां (शां) तिनाथस्य मंदिरं (रम्)। स्वलात्यम् संज्जक (सर्जक)-सूत्रधार: स्रेष्टि (श्रेष्ठि) नामा। तेन वि. (ता) नं च महास्वे (श्वे)-

6. तं निर्मितमतिसुन्दरं (रम्) ।।1।।

श्रीमच्चन्द्रकराचार्य्याम्नाय देसी (शी) गणान्वये समस्त विद्याविनयानन्दित

7. विद्वज्जना: प्रतिस्टा (ष्ठा) चार्या: श्रीमंत सुभद्रा: चिरं जयन्तु।

अर्थ:

स्वस्तिश्री संवत् 10.. (1000,1010 या 1060) (विक्रमाब्द) फाल्गुन [illegible]ी नवमी भोमवार को विख्यात श्रीमान् गयाकर्ण देव के विजय राज्य में राष्ट्रकूट कुल (राठौर वंश) में उत्पन्न जब महासामन्ताधिपति समृद्धिशाली श्रीमान् गोल्हणदेव (के संरक्षण में) गोलापूर्व आम्नाय में (उत्पन्न) वेलप्रभाटिका नगरी में जिन्होंने अपनी आम्नाय की कीर्ति बढ़ाई है, जो तर्कतार्किक चूड़ामणी माधवनन्दि के कृपापात्र (भक्त) हैं, उन श्रीमान् साहु श्री सर्वधर के सदैव धर्म-दान एवं अध्ययन में रत रहने वाले सुपुत्र श्रीमान साहु महाभोज ने, शान्तिनाथ प्रभु के इस रमणीक मंदिर का निर्माण कराया। श्रेष्ठि पद को धारण करने वाले, सहज उपलब्ध हुए संजक सुत्रधार (स्थपति-मिस्त्री) के (निदेशन में) इस महाधवल अतिसुन्दर जिनालय का निर्माण सम्पन्न हुआ। श्री चन्द्रकर आचार्य की आम्नाय में, विद्वज्जनों को अपने ज्ञान और विनय से प्रमुदित करने वाले, देशीयगण अन्वय के प्रतिष्ठाचार्य श्रीमान् सुभद्र चिरंजीवी हों।

इस अभिलेख में कलचुरिवंश के राजा गयगर्ण देव के राज्य में उनके महासामन्त राष्ट्रकूट वंश गोल्हणदेव के शासन में संवत् 10... (1000,1010, अथवा 1060 में)भगवान शान्तिनाथ के भव्य मंदिर के निर्माण तथा मूर्ति की प्रतिष्ठा का वर्णन किया गया है।

इस अभिलेख में वर्णन है कि इस विशाल शान्तिनाथ मूर्ति और भव्य मंदिर के निर्माणकर्ता तथा इनकी प्रतिष्ठा का कार्य सम्पन्न कराने वाले गोलापूर्व वंश में उत्पन्न हुये श्री महाभोज थे। इस अभिलेख में गोलापूर्वाम्नाये इस पद का विशेषण उरुकृताम्नाये उल्लिखित है। इस विशेषण से श्री महाभोज के प्रभावशाली होने और साधन सम्पन्नता का अनुमान सहज ही लगाया जा सकता है। मंदिर और मूर्ति के निर्माता तथा प्रतिष्ठाकारक श्री महाभोज के परिवार पर तर्क तार्किक-चूड़ामणि श्रीमान् माधवनन्दि की विशेष कृपा थी। श्री महाभोज स्वयं धर्मात्मा, दानवीर और स्वाध्यायी थे। उनके पिता का नाम श्री सर्वथर और इस मूर्ति और प्रतिष्ठा महोत्सव के प्रतिष्ठाचार्य, महामनीषी श्री सुभद्र थे। उनके वैदुष्य और विनय गुण से तत्कालीन विद्वद्जन अत्यधिक अभिभूत ओर प्रसन्न दे।

विमर्श:

अभिलेख के संवत् में तीसरा अंक स्पष्ट नहीं पढ़ा जा सका जिसके कारण उसे 1010 मानने पर विद्वानों में कुछ मतभेद है। प्रथम और द्वीतीय अंकों से 10 की संख्या और चौथे अंक से शून्य स्पष्ट पढ़ा गया है इसलिए इस अभिलेख को संवत् 1010 और 1060 के बीच कही भी रखा जा सकता है, इस पर कोई मतभेद नहीं है।

इस मूर्ति अभिलेख में कुछ ऐसी विशेषताएं हैं जिनके कारण यह अभिलेख अपने समकालीन अथवा पूर्वा परवर्ती अभिलेखों में अपना अलग स्थान बनाता है। पहली विशेषता यह है कि इसमें शासक गयाकर्णदेव के नाम के साथ उनके स्थानीय मण्डलाधिपति गोल्हणदेव राठौर का नाम भी सूचित किया गया है। दूरसी महत्वपूर्ण बात है कि इसमें मंदिर निर्माता स्थापति कलाकार संजक का नाम हमें ज्ञात हो जाता है। तीसरी विशेषता यह मानना होगी कि गोलापूर्व आम्नाय के उल्लेख के कारण यह लेख गोलापूर्व जाति का गौरव-ध्वज सिद्ध होता है। यह एक ऐसा महत्त्वपर्ण दस्तावेज है जो दसवी शताब्दी में, कलचुरी राज्य में धर्मानुरागी गोलापूर्व जाति को बहुसंख्यक, समृद्धिशाली, प्रभावी और राज्यमान्यता प्राप्त होने की सुनिश्चित जानकारी देता है। चौथी विशेषता यह है कि मंदिर या मूर्ति के प्रतिष्ठाचार्य श्री सुभद्र का नाम उनके परम्परा आचार्य चन्द्रकर के नाम सहित अंकित मिल जाता है। ये कुछ इस प्रकार की सूचनाएँ हैं जो मूर्तिलेखों में प्राय: उपलब्ध नहीं होती। दसवीं शताब्दी या उसके पूर्वकाल में तो बिल्कुल भी नहीं।

इस अभिलेख का सार यह है कि- श्री विक्रम संवत् 1010 फाल्गुन वदी नवमी भौमवार के दिन श्री गयाकर्णदेव के शासन का में राष्ट्रकुट कुलोद्भव श्री गोल्हणदेव सामन्ताधिपति के समय में श्री माधवव्चन्द्राचार्य के कृपापात्र,

साधु स्वभावी गोलापूर्व आम्नाय के श्रेष्ठिप्रवर के धर्मदान अध्ययनरत महाभोज नामक सुपुत्र ने यह शान्तिनाथ मंदिर बनवाया तथा प्रतिष्ठाचार्य सुभद्र ने इस जिनालय की प्रतिष्ठा कराई।

अभिलेख में आगत विशिष्ट शब्दों पर विमर्श: महासामन्त:

कलचुरि शासन में अपनी महानता प्रदर्शन करने हेतु पदाधिकारियों के पदों के आगे महा उपपद का प्रयोग होता रहा है। पदाधिकारियों में जैसे- महादेवी, महाराज, महामंत्री, महामात्स, महासामन्त, महापुरोहित, महाप्रतिहार, महाक्षपटलिक, महाप्रभाग, महावश्वसाधनिक, महाभाण्डारिक आदि नाम विख्यात रहे हैं। राष्ट्रकुट कुल में ऐसा ही महासामन्ताधिपति पद रहा है। महासामन्त-सेना के अधिपति होते थे और महासामन्तों का अधिपति महासामन्ताधिपति।

गोल्हणदेव:

श्रवणबेलगोला अवस्थित चन्द्रगिरि (छोटा पहाड़-चिक्कवेट्ट) से उपलब्ध एक अभिलेख में मूलसंघ नन्दिगण के प्रभेद रूप देशीगण के गोल्लदेशाधिप किन्हीं गोल्लाचार्य मुनि का नामोल्लेख हुआ है।

प्रस्तुत लेख में उल्लिखित महासामन्ता-धिपति गोल्हणदेव को गोल्लदेशाधिप गोल्लाचार्य होने का अनुमान भी लगाया गया है किन्तु गोल्लाचार्य को नूत्नचंदिल नरेश भी लेख में कहा गया है। अत: गोल्हणदेव राष्ट्रकूट कुलोद्भव होने का उनका गोल्लदेशाधिप होने का अनुमान करना तर्कसंगत नहीं प्रतीत होता है।

मुरुकृताम्नाय पद गुरुकृताम्नाय सम्भावित:

इस पद के संबंध में (स्व.) पं. फूलचंद्र जी सिद्धान्तशास्त्री का अभिमत है कि मुरु शब्द अर्थ गर्भ हो सकता है। मौर्यवंश के राजा चन्द्रगुप्त जैन थे। वे मुनि होकर अंतिम श्रूतकेवली भद्रबाहु के साथ दक्षिण चले गये थे। उनके साथ मौर्यवंश के कुछ सद्गृहस्थ भी गये हो और उन्हीं की संतानों के नाम पर वहाँ मुरुवंश की स्थापना हुई हो तो कोई आश्चर्य नहीं।

प्रस्तुत अभिलेख में इस पद के पहले गोलापूर्वाम्नाय और उसके बाद यह पद आया है। संभवत: अधिक धिस जाने से वर्ण समझने में भ्रान्ति हुई है। मुरु के मवर्ण के स्थान में संभवत: ग वर्ण रहा है और यह पूरा पद गुरुकृताम्नाय है, जिसका अर्थ है गुरु द्वारा अंगीकृत आम्नाय। इस पद के पूर्व गोलापूर्व आम्नाय का नामोल्लेख हुआ है तथा पश्चात् माधवनन्दि और उनसे उपकृत साधु सर्वधर एवं उसके पुत्र महाभोज का नाम आया है। इससे स्पष्ट है कि माधवनन्दि महाभोज के पिता साधु सर्वधर के गुरु थे तथा वे गोलापूर्व आम्नाय के थे। संभवत: मुरुकृताम्नाय का शुद्ध पाठ गुरुकृताम्नाय है। अभिलेख संख्या 169 में गुरुवर्यवरान्वय मूलपाठ में प्राप्त होता है।

स्वलात्यम:

डॉ. व्ही.व्ही. मिराशी ने इस शब्द का अर्थ करने में अपनी असमर्थता प्रकट की है। पं. फूलचन्द्र सिद्धान्त शास्त्री ने स्वलात्य को स्वलास्य समझा है और उसे संजक सूत्रधार का नाम होने का अनुमान लगाया है किन्तु आगे श्रेष्ठि के पश्चात् नाम शब्द आने से पं. फूलचन्द्र जी सिद्धान्त शास्त्री का अनुमान तर्कसंगत प्रतीत नहीं होता।

संभवत: स्वालात्यम् के स्थान में स्वजात्यम् शब्द रहा है, जिसका एक अर्थ है अपनी जाती। अर्थात् मंदिर निर्माता महाभोज की जाति गोलापूर्वाम्नाय। दूसरा अर्थ है सुजाति। वर्ण व्यवस्था के अंतर्गत-चौथा वर्ण है शूद्र। ये दो प्रकार के होते हैं स्पृश्य और अस्पृश्य। मंदिर और मूर्तियों के निर्माण में आदि से अंत तक पवित्रता का विचार किया जाता रहा है। इस दृष्टि को ध्यान में रखते हुए मंदिर निर्माण करने वाला श्रेष्ठी नाम का सूत्रधार (मिस्त्री) संभवत: स्पृश्य-सुजाति का था।

संज्जक:

प्रतिमा लेखों में वर्ण का द्वित्व रूप रेफ के संयोग में मिलता है। इस शब्द में संभवत: रेफ रही है। पत्थर घिस जाने से वह अपठनीय हो गई। शुद्ध रूप से सर्ज्जक रहा प्रतीत होता है, जिसका यहाँ अर्थ है निर्माण कार्य करने वाला। इस प्रकार स्वजात्यम् सर्ज्जक सूत्रधार: श्रेष्ठि नाम का अर्थ निकलता है- निर्माण कार्य करने वाला श्रेष्ठी नाम का सूत्रधार (मिस्त्री) सुजाति का था।

वेल्लप्रभाटिका:

प्रस्तुत प्रतिमाभिलेख में गोलापूर्व आम्नाय में हुए महान् तार्किक माधवनन्दि परम भक्त साधु सर्वधर के पुत्र महाभोज के द्वारा यहाँ शान्तिनाथ मंदिर बनवाया गया था। यह नगरी थी या उद्यान लेख में स्पष्ट नहीं किया गया है। इस नाम का आज बहोरीबन्द के निकट कोई ग्राम नहीं है। अत: अनुमानत: यह स्थल विल्ववृक्षों वाली कोई वाटिका थी। वेल्लप्रभाटिका में संभवत: भ के स्थान में व रहा है।

हमारे मत में यह शब्द स्थान सूचक न होकर काल सूचक प्रतीत होता है। अंग्रेजी से हिन्दी रूपान्तरण में यह शब्द वेल्लप्रभातिकायां रहा है जिसे संपादकों ने वेल्लप्रभाटिकायां समझा है। इसकी प्रतिष्ठा बहोरीबन्द में प्रभातबेला में सम्पन्न हुई ज्ञात होती है। संभवत: स्थान का नाम नहीं बताया गया है, अपितु इस शब्द से प्रतिष्ठा बेला दर्शाई गई है।

शान्तिनाथ-प्रतिमा-परिचय:

यह प्रतिमा कायोत्सर्ग आसन में स्लेटी पाषाण से निर्मित है। पाषाण फलक 13 फूट 9 इंच ऊँची और 6 फूट 10 इंच चौड़ा है। नख से सिर तक प्रतिमा की अवगाहना कनिंघम के अनुसार 12 फुट 2 इंच और चौड़ाई 3 फुट 10 इंच है। प्रतिमा के केश घुंघराले और वर्तुलाकार पाँच हिस्सों में ऊपर की ओर उठे हुए (बंधे) दर्शाये गये हैं। वक्षस्थल पर श्रीवत्स चिह्न अंकित है।

प्रतिमा के परिकर का ऊपरी भाग नहीं है। शेष अंश में प्रतिमा की दोनों ओर एक-एक उड़ते हुए मालाधारी विद्याधर देव और हाथों के नीचे

चँवरवाही देव सेवारत खड़े अंकित किये गये है। इनके नीचे दोनों ओर एक-एक उपासक हाथ जोड़े दर्शाये गये हैं। इनके एक-एक पैर के घुटने भूमि पर टिके हुए हैं और दूसरे पैर कुछ मुड़े हुए है ये आभूषण धारण किये हैं। इनके नीचे आसन पर सात पंक्ति का अभिलेख उत्कीर्ण है। अभिलेख के नीचे मध्य भाग में तीर्थंकर के चिह्न स्वरुप दो हरिण पास पास ऐसे अंकित किये गये हैं मानो वे परस्पर कुछ कह रहे हों। हरिणों की दोनों सामने की ओर मुख किये एक-एक सिंह अलंकरण स्वरूप अंकित किया गया है।

समय-विमर्श:

सर्वप्रथम यह प्रतिमा अभिलेख श्री एलेक्जेन्डर कनिंघम द्वार पढ़ा गया था। उन्होंने संवत् सूचक दो अंकों में 10 पढ़ा था। उनके पश्चात् डॉ. आर.जी. भण्डारकर और डॉ. व्ही.व्ही. मिराशी ने पढ़ा किन्तु वे संवत् सूचक पूरे अंक ज्ञात नहीं कर सके। वह अंश खण्डित हो गया।

लेख में गयाकर्णदेव राजा का नामोल्लेख मिलता है। वे कलचुरि राजा यश: कर्णदेव के पुत्र थे। इस संबंध में तेवर से प्राप्त कलचुरि संवत् 602 का अभिलेख उल्लेखनीय है। इसमें न केवल गयाकर्णदेव के पिता यश:कर्णदेव का नाम आया है। अपितु यशकर्णदेव के पिता कर्णदेव का भी नामोल्लेख किया गया है। गायकर्णदेव के इस शिलालेख से ज्ञात होता है कि वे ईसवी 1151 में राज्य संचालन कर रहे थे।

इसकी रानी का नाम अल्हण देवी और इसके पुत्र का नाम नरसिंहदेव था। इस रानी ने अपनी वैधव्यावस्था में भेड़ाघाट में एक शिव मंदिर, मठ और व्याख्यान शाला निर्मित कराई थी। भेड़ाघाट से प्राप्त कलचुरि संवत् 809 के शिलालेख से प्रकट होता है कि ईसवी 1156 के पूर्व गयाकर्णदेव का देहान्त हो गया था और नरसिंह राज्य करने लगे थे।

गयाकर्णदेव के कलचुरि संवत् 802 के तेवर शिलालेख से यह भी ज्ञात होता है कि उसका युवराज पुत्र नरसिंह देव राजकाज में गयाकर्णदेव का सहयोग करने लगा था। श्री यश:कर्णदेव का ईसवी 1122 का एक अभिलेख जबलपुर से भी मिला है जिसमें दिन का नाम सोमवार बताया गया है। यह दिन काल गणना करने पर ईसवी 1122 के 25 सितम्बर को प्राप्त होता है। अत: ज्ञात होता है कि ईसवी 1122 में गयाकर्णदेव ने राज्यभार सम्हाल लिया था।

इन उल्लेखों के परिप्रेक्ष्य में कहा जा सकता है कि गोल्हणदेव को उत्तराधिकारक के रूप में राज्य बारहवीं शताब्दी के प्रथम चरण में प्राप्त हो गया था और ईसवी 1151 तक वे निर्वाध शासन करते रहो। ईसवी 1156 के उसकी विधवा पत्नी अल्हणदेवी के भेड़ाघाट शिलालेख से ज्ञात होता है कि ईसवी 1156 के पूर्व वह काल कवलित हो गया था। कहते हैं एक अभियान के समय यह राजा हाथी पर सवार था। उसका हार एक वृक्ष की शाखा में ऐसा उलझ गया था कि वह जब तक सुलझाया गया उसके पूर्व राजा का गला घुट गया और उसकी मृत्यु हो गई।

इस प्रकार गयाकर्णदेव का अंतिम शिलालेख चेदि संवत् 802 (ई. 1151) का प्राप्त होने से शांन्तिनाथ प्रतिमाभिलेख का समय शक संवत् में उत्कीर्ण किया गया प्रतीत होता है, जिसका आरम्भ इंसवी से 77 वर्ष 5 माह बाद आरंभ हुआ था। अत: कनिघम के अनुसार इस प्रतिमा लेख का समय शक संवत् 1020 से 1047 के मध्य का निर्णय किया जाना तर्कसंगत प्रतीत होता है।

अभिलेख-प्राप्तिस्थल बहोरीवन्द:

यह स्थान कैमूर पहाड़ी के तले समतल भूमि पर जबलपुर से उत्तर की ओर 64 किलोमीटर दूर है। पश्चिम मध्य रेलवे लाइन पर कटनी-जबलपुर के बीच सिहोरा रेलवे स्टेशन से 24 किमी. दूर सिहोरा-दमोह रोड पर अवस्थित है।

श्री कनिंघम ने बहुरीबन्द का अर्थ बहुबाँध निकाला था। उन्हें इस क्षेत्र में ऐसे 45 जलाशय नक्शे में प्राप्त हुए थे जिनमें जल संगृहीत होता था। प्रसिद्ध ग्रीक इतिहासकार पटौलमी ने इसका नाम थोलवन लिखा है। जनश्रुति के अनुसार यह एक बड़ा नगर था। इस नगर का कोई आकार नहीं था और न कोई प्रवेशद्वार थे।

इस नगर के चारों ओर जैन, बौद्ध और वैदिक संस्कृति के अवशेष विद्यमान है। इस ग्राम से उत्तर की ओर तीन किलोमीटर दूर तिगवां ग्राम में गुप्तकालीन एक मंदिर है। समीप ही रूपनाथ नामक स्थान है जहाँ राम, लक्ष्मण, और सीताकुण्ड, महादेव का मंदिर तथा प्रसिद्ध अशोक का शिलालेख संरक्षित है। ग्राम के पास तालाब के किनारे उपलब्ध पुरातात्त्विक सामग्री से नगर की विशालता का सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है।

नगरों के नाम किन्हीं घटनाओं या नगर की विशेषताओं पर आश्रित रहे हैं। ग्रीक, इतिहासकार टौलमी (पटौलमी) द्वारा बताया गया इस नगर का थोलवन नाम इस संबध में विचारणीय है। इस नाम में थोल पूर्वपद और वन उत्तर पद है। थोल का अर्थ थोड़ा (अपर्याप्त) होता है और वन का अर्थ जल। नगर ने कभी पाणी का संकट रहा है। जब तक यह संकट बना रहा नगर का नाम थोलवन रहा किन्तु जब नगर के चारो ओर बाँधे गये, पानी बाँधो में संगृहीत किया गया और जब पानी बहुरकर (लीटकर) बाँधों में बन्द होने लगा तब नगर का नाम परिवर्तित हुआ। थोलवन को ही बहुरिबन्द का जाने लगा।

नगर के नामकरण में एक अन्य संभावना यह भी प्रतीत होती है कि कभी यहाँ संघन वन था। थोल का अर्थ स्थल-संघन रहा है। वन की सघनता के कारण इसे थोलवन कहा गया होगा। कालान्तर में इस वन के बहेड़ वृक्षों की बहुलता रही होगी। और इसे वहेरवन कहा जाता रहा है। बहेरवन के अपभ्रंश रूप ही बहोरीवन या बहोरीबन्द नाम ज्ञान होते है।

डॉ. श्रेयांस कुमार जी जैन बड़ौत का हुआ विशेष सम्मान

दिल्ली। अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन शास्त्रि-परिषद के यशस्वी अध्यक्ष व्याख्यान वाचस्पति डॉ. श्रेयांस कुमार जैन जी बड़ौत का दिल्ली के रोहिणी सेक्टर 24 जैन समाज द्वारा परम पूज्य आचार्य श्री सौभाग्य सागर जी महाराज के सान्निध्य में पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव के अवसर पर तप कल्याणक के दिन 22 जून को विशेष सम्मान किया गया। इस अवसर पर उनकी सहधर्मिणी श्रीमती ज्योति जैन जी को भी सम्मानित किया।

डॉ श्रेयांस कुमार जी जैन बड़ौत का रोहिणी जैन समाज के लिए शिक्षा के क्षेत्र में, समाज को संगठित करने, जैन विद्या आदि में महत्त्वपूर्ण योगदान मिलता रहता है। उनके इस अवदान को दृष्टिगत रखते हुए जैन समाज ने उन्हें प्रशस्ति पत्र, सम्मान राशि भेंट कर विशेष सम्मान से सम्मानित किया है।

इस उपलब्धि पर डॉ. साब को बड़ी संख्या में विद्वानों, समाज श्रेष्ठियों, पत्रकारों, इष्ट मित्रों आदि ने हार्दिक बधाई और शुभकामनाएं प्रेषित की हैं।

-डॉ. सुनील जैन संचय, ललितपुर

अ. भा. जैन पत्र सम्पादक संघ की दो दिवसीय कार्यशाला महावीर जी में सम्पन्न
पत्रकार अपनी शक्ति का उपयोग समाजहित में करें

"हथियारों की ताकत से किसी को भी रोका जा सकता है लेकिन उन विचारों को कोई रोक नहीं सकता जो पत्रकारों के दिमाग में आ गये हैं। जिसके हाथ में ताकत होती है उसी से सब डरते हैं। ताकत चाहे कलम की हो या सत्ता की। पत्रकारों को अपनी कलम का उपयोग समाज हित में करना चाहिए। परोपकार से बड़ा कोई पुण्य नहीं और दूसरे को पीड़ा देने से बड़ा कोई पाप नहीं है। भगवान महावीर के सत्य, अहिंसा, अस्तेय, अपरिग्रह और ब्रह्मचर्य के पाँच सिद्धांत हम सभी को प्रमाद से अप्रमाद और असत्य से सत्य की ओर ले जाने के लिए काफी हैं।" यह विचार अखिल भारतीय जैन पत्र सम्पादक संघ द्वारा प्रसिद्ध जैन तीर्थ श्री महावीर जी में 23 एवं 24 जून को हुई संघ की दो दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला का उद्घाटन करते हुए राजस्थान अल्पसंख्यक आयोग के अध्यक्ष सरदार जसवीर सिंह ने व्यक्त किये। श्री गणतंत्र जैन द्वारा मंगलाचरण से आरंभ इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री धीरज जैन, संयुक्त निदेशक गृह मंत्रालय, भारत सरकार तथा समारोह–गौरव स्वदेश श्री भूषण जैन (संपादक– पंजाब केसरी), डॉ. अरविंद जैन, भोपाल, डॉ. एन. के. खींचा तथा श्री ललित गर्ग थे। अध्यक्षता संघ के अध्यक्ष श्री शैलेन्द्र जैन, अलीगढ़ ने की। श्री मिलापचंद डंडिया, जयपुर ने शाल, श्रीफल से अतिथियों एवं समारोह के गौरव अतिथियों का स्वागत श्री चीरंजीलाल बगडा, श्री प्रदीप जैन, दिल्ली, डॉ. नरेन्द्र जैन भारती, सनावद, श्री अखिल बंसल, जयपुर, श्री नरेन्द्र जैन, अजमेर, श्री बी. एल. सेठी एवं डॉ. अनिल जैन, जयपुर ने किया। श्री महावीर जी तीर्थक्षेत्र कमेटी के उपाध्यक्ष श्री एस. के. जैन ने स्वागत भाषण तथा श्री अखिल बंसल, महामंत्री ने संघ की अब तक हुई गतिविधियों की जानकारी दी।

जैन समाज की घटती जनसंख्या पर चिंता जाहिर करते हुए मुख्य अतिथि धीरज जैन ने वर्ष 2021 की जनगणना में धर्म कालम में जैन अंकित कराने का आग्रह करते हुए बताया कि 6 अल्पसंख्यकों में जैन समाज पाँचवे और छठवें पर मात्र पारसी समुदाय है जैनियों की संख्या 44 लाख 51 हजार 753 है जिसमें प्रत्येक एक हजार लडकों पर 889 लडकियाँ हैं, जो चिंता का विषय है।

पंजाब केसरी के सम्पादक श्री स्वदेशभूषण जैन ने पत्रकारों की मेहनत का उल्लेख करते हुए बताया कि आर्थिक परिस्थितियों से जूझते हुए विज्ञापन के बिना पत्र निकालना बहुत बड़ा कार्य है। चतुर्विधसंघ–मुनि, आर्यिका, श्रावक और श्राविकाओं की जानकारी रखते हुए पत्रकार मीडिया पर कई बंदिसों के बाबजूद अच्छा कार्य कर रहें है। राजस्थान के प्रदेशाध्यक्ष श्री रमेश तिजारिया ने जैन पत्रों को आर्थिक सहायता देने की समाज से अपील की ताकि पत्रकार लेखन कार्य के लिए पूरी तरह से स्वतंत्र हो सकें । श्री एन.

के.खीचा ने स्मृतियों को संजोए रखने के लिए पत्रकारों के जीवन से संबंधित म्यूजियम बनाने हेतु सुझाव दिया। डॉ. अनिलकुमार जैन (संपादक) ने "जैन संवाद" पत्रिका का विमोचन कराया । अध्यक्ष– श्री शैलेन्द्र जैन ने बताया कि इस तरह के आयोजन छत्तीस स्थानों पर किये जाएंगे। रात्रिकालीन द्वितीय सत्र श्री पारस जैन पार्श्वमणि के मंगलाचरण से प्रारंभ हुआ जिसमें श्री चिरंजीलाल बगडा, कोलकाता ने "जैन पत्रकारिता और सामाजिक दायित्व" विषय पर आलेख प्रस्तुत किया। श्री नरेन्द्रकुमार जैन, अजमेर ने प्राकृतिक चिकित्सा का कोर्स प्रारम्भ किये जाने पर जोर दिया । श्री जगदीश जैन एवं अनिलकुमार जैन ने भी विचार रखे।

दूसरे दिन 24 जून को तृतीय सत्र डॉ. अरविंद कुमार जैन, भोपाल तथा श्री ललित गर्ग की अध्यक्षता में डॉ.नरेन्द्र जैन 'भारती', सनावद के मंगलाचरण से प्रारंभ हुआ। डॉ. राजीव प्रचंडिया ने अपने आलेख में शब्द शक्ति की चर्चा करते हुए बताया कि वाक्य में विराम चिन्ह की अशुद्धि से अर्थ का अनर्थ हो जाता है इसलिए पत्रकारों को एक एक शब्द सोच–समझकर सही विराम चिन्हों के साथ लिखना चाहिए । मुनियों के शिथिलाचार पर जोरदार प्रहार करते हुए डॉ. नरेन्द्र जैन भारती ने "जैन पत्रकारिता के ध्यातव्य विषय" पर प्रेरक विचार प्रस्तुत किये। श्री राकेश जैन चपलमन ने इलेक्ट्रानिक मीडिया से जुडे लोगों को संघ में स्थान दिलाने, पत्रकार श्री पवन जैन, सनावद ने बेटियों का विवाह जैन परिवार में कराने तथा प्रदीप जैन, दिल्ली संपादक– जैन प्रचारक ने कविताओं के माध्यम से मुनि धर्म की वर्तमान स्थिति का चित्रण, श्री माणकचंद जैन, उदयपुर ने एक पेज में बच्चों को संस्कारित करने हेतु लेख छापने का आग्रह किया। डॉ. अरविंद जैन, भोपाल ने पत्रकारों को सदाशयता के साथ कुरीतियों के विरोध करने पर बल दिया। श्री ललित गर्ग ने मंदिरों, स्कूलों, कॉलेजों के डेटा सुरक्षित रखने की अपील की। बघेरवाल संदेश का विमोचन किया गया। मुनि प्रतीकसागर प्रकरण को लेकर यह सर्वसम्मत प्रस्ताव पारित किया गया–

शिथिलाचार निवारण एवं एकल विहार निषेध संबंधी प्रस्ताव

अखिल भारतीय जैन पत्र सम्पादक संघ की दि. 23–24 जून, 2018 को श्री महावीर जी में सम्पन्न राष्ट्रीय कार्यशाला में कोलकाता में विगत 28 अप्रेल, 2018 को मुनिश्री प्रतीकसागर जी महाराज के प्रकरण के संबंध में प्राप्त जानकारी के पश्चात् संघ यह निर्णय लेता है कि मुनिश्री प्रतीकसागर महाराज के शिथिलाचार के संबंध में मुनिधर्म से विपरीत बातें कई बार समाज के सामने आ चुकी हैं जिनको लेकर पत्र सम्पादक संघ ने चिन्ता व्यक्त करते हुए समाज से आग्रह किया है कि उन्हें मुनि के रूप में हतोत्साहित किया जाए तथा किसी तरह का समर्थन न दिया जाए ताकि मुनि संघों में शिथिलाचार को बढ़ावा न मिले। जैन पत्र सम्पादक संघ यह भी अपेक्षा करता है कि किसी भी साधु को एकलविहारी होने से रोका जाए। यदि कोई साधु एकलविहारी है तो उसे किसी संघ में शामिल कराया जाए।

प्रस्तावक–डॉ. चीरंजीलाल बगड़ा, कोलकाता

समर्थक– श्री अखिल बंसल, जयपुर

अनुमोदक– उपस्थित सभी पत्र–पत्रिका सम्पादक

इस कार्यशाला में सर्वश्री जिनेश जैन कोठिया (दिल्ली), श्री उदयभान जैन, जयपुर, श्री कमल हाथीशाह, भोपाल, श्री आर. के. जैन, दिल्ली, श्री शांतिनाथ होतपेटे, हुबली (कर्नाटक) श्रीमती मीना जैन, उदयपुर आदि सभी पत्रकारों ने स्व परिचय दिया । संघ के महामंत्री श्री अखिल बंसल ने स्व. श्री चुन्नीलाल जैन की स्मृति में पुरस्कार देने की घोषणा की। कार्यक्रम का सफल संचालन महामंत्री श्री अखिल बंसल ने किया।

–डॉ. नरेन्द्र जैन 'भारती'
ए 27, नर्मदा विहार,सनावद (म.प्र.)

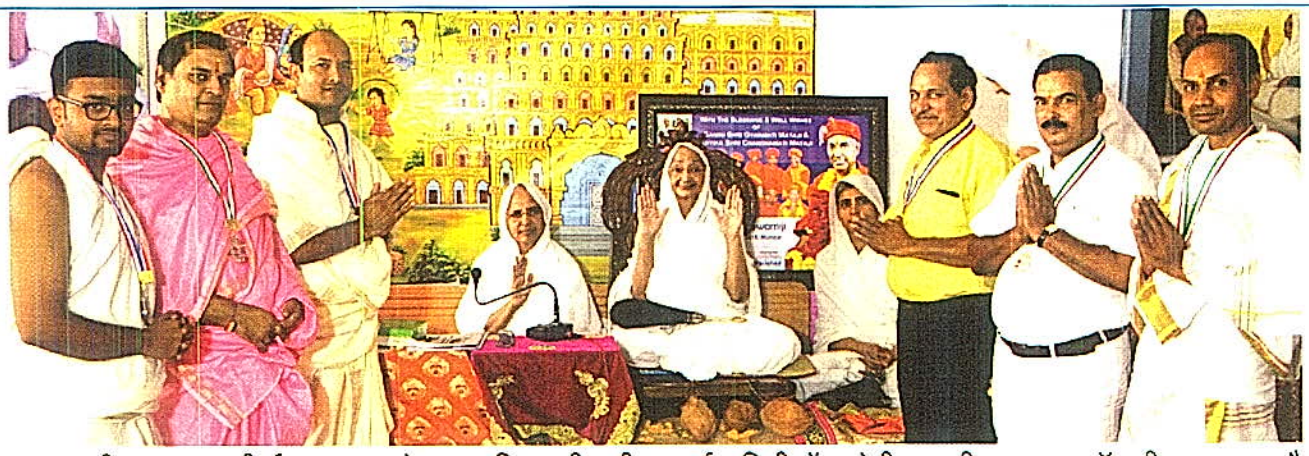

पूज्य माताजीद्वय का आशीर्वाद प्राप्त करते युवा परिषद की नवीन कार्यकारिणी में मनोनीत राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. जीवन प्रकाश जैन, राष्ट्रीय महामंत्री श्री उदयभान जैन-जयपुर, राष्ट्रीय मंत्री श्री विजय जैन-मांगीतुंगी, राजस्थान प्रदेश अध्यक्ष श्री दिलीप जैन-जयपुर तथा तिवरी संयोजक पं. सतेन्द्र जैन व भाण्डुप संयोजक-श्री रितेश जैन

सम्मान की परम्परा आज की नहीं भगवान ऋषभदेव के समय की

–पीठाधीश रवीन्द्रकीर्तिस्वामी

सम्मान और पुरस्कृत करने की हमारी परपंरा आज की नहीं बल्कि भगवान ऋषभदेव के समय की है। भगवान ऋषभदेव को प्रथम आहार ग्रहण कराने से राजा श्रेयांस को दानतीर्थ प्रवर्तक की उपाधि प्राप्त हुई थी। लोगों को अच्छे कार्य करने के लिये प्रेरित करना चाहिये। उसी सम्मान की प्रकिया को यह न्यास आगे बढ़ाते हुए अपने इतिहास को संरक्षित कर रहा है। यह बात स्वस्ति श्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामी जी ने रविवार, 24 जून 2018 को रवीन्द्र नाट्य गृह में ऋषभदेव गौरव न्यास के चतुर्थ सम्मान समारोह के अवसर पर समाजजनों को अध्यक्ष के रूप में संबोधित करते हुए कहीं।

इंफोबींस लिमिटेड के संस्थापक युवा उद्यमी श्री अविनाश सेठी ने जैन युवा गौरव–17 के रूप में अपने सम्मान के प्रत्युत्तर में कहा कि मैं जैन कुल में उत्पन्न हुआ यह सबसे बड़ी उपलब्धि है, सामाजिक और शैक्षणिक उपलब्धियाँ तो बहुत छोटी चीज हैं। मेरे जीवन में सबसे बड़ा परिवर्तन तब हुआ जब हमारे घर में चैत्यालय बना एवं रामचन्द्रनगर मंदिर में पाठशालायें चलती थी। एक हलचल मेला के लिये जब हम स्टाल की टिकिट बेचते थे तभी से हमारे अंदर विकय के गुण स्वयमेव ही आ गये उसी प्रकार प्रवचन में कैसे लोगों को साधना एवं उन्हें बुलाना यह सब गुण मुझे वैसे ही मिल गये। 21 वर्ष के बाद जब मैं इंदौर से बाहर निकला तो ज्ञात हुआ कि हमारे काम करने का तरीका बहुत अलग है। परिवार एवं समाज के साथ रहने के कारण मुझे जो शिक्षा मिली वे स्वयमेव मेरे अंदर उतरती चली गई। सत्य, अहिंसा, अपरिग्रह, अनेकांतवाद का जो फार्मूला है वह किसी भी उलझन में पड़ने से पहले ही हमें उस उलझन से उबार लेता है। आज विश्व में जितने भी संकट हैं उन सबका समाधान जैन सिद्धांतों से ही मिलेगा। अपने कार्य के प्रति ईमानदार बनें। अपने आप से वादा करें, अपने परिवार, समाज एवं संस्था के प्रति ईमानदार रहें। आपने ईमानदारी से कार्य किया तो बहुत लोग आपके पीछे खड़े होकर आपको आगे बढ़ाते जायेंगे अतः अपना कार्य पूरी ईमानदारी से करें, सफलता अवश्य मिलेगी।

जैन युवा गौरव–18 से सम्मानित कुमारी नित्यता जैन ने स्पोटर्स की फील्ड को इस पुरस्कार में जोड़ने एवं उन्हें सम्मानित करने हेतु ऋषभदेव गौरव न्यास के प्रति आभार व्यक्त किया और कहा कि आगे भी वे इसी प्रकार समाज को गौरवान्वित करने का प्रयास करती रहेगी।

दि. जैन महिला संगठन की संस्थापक अध्यक्ष एवं गणिनी ज्ञानमति माताजी की अनन्य भक्त श्रीमती सुमन जैन ने अपने सम्मान के उत्तर में कहा कि समता, ममता और क्षमता की त्रिवेणी नारी समाज का अभिन्न अंग है। समाज की प्रतिभा को निखारना एवं उन्हें हर संभव सहयोग देना हमारा ध्येय है। समाज की उन्नति, धर्म के प्रति आस्था ही हमारी प्रगति का आधार है। यह मेरा नहीं अपितु संपूर्ण दिगम्बर जैन महिला संगठन का सम्मान है।

कार्यक्रम का प्रारंभ श्रीमती उषा पाटनी के मंगलाचरण एवं कुमारी पावन जैन के मंगल नृत्य से हुआ। समारोह स्वस्तिश्री पीठाधीश श्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामी जी की अध्यक्षता एवं पं. रतनलाल जी जैन शास्त्री जी के मुख्य आतिथ्य में सम्पन्न हुआ। सारस्वत अतिथि के रूप में दे.अ.वि.वि.के कुलपति प्रो. नरेन्द्र धाकड़, डॉ. सविता जैन,(अधिष्ठात्री शीतलतीर्थ–रतलाम), श्री शोभित जैन आई.ए.एस.,न्यायमूर्ति श्री जे. के. जैन, प्रो. संजय व्यास एवं डॉ.जीवन प्रकाश जैन–हस्तिनापुर उपस्थित थे।

ऋषभदेव न्यास के संस्थापक डॉ. अनुपम जैन ने न्यास की गतिविधियों पर प्रकाश डाला एवं कहा कि न्यास में

निर्णय पारदर्शिता के साथ किये जाते है इसी कारण इनका समाज में गौरव है। निर्णायक मंडल के संयोजक न्यायमूर्ति श्री जे. के. जैन ने निर्णायक मंड़ल के निर्णयों की घोषणा की जिसके अनुसार समाज सेवा के क्षेत्र में वर्ष 2017 एवं 2018 के सम्मान हेतु श्री मनोहरसिंह जी एवं श्री मानसिंह जी (सेवा संस्कार केन्द्र) तथा श्रीमती सुमन जैन, संस्थापक अध्यक्ष– दि.जैन महिला संगठन तथा जैन युवा गौरव सम्मान हेतु इन्फोबिन्स लिमिटेड के संस्थापक द्वय श्री सिद्धार्थ सेठी एवं श्री अविनाश सेठी तथा कु. नित्यता जैन को चयनित किया गया।

सभी सम्मानित विभूतियों को रुपये 1,11,000.00 की राशि, शाल, श्रीफल, प्रतीक चिन्ह तथा सम्मान पत्र भेंट कर सम्मानित किया गया। श्री मनोहरसिंह जी एवं श्री मानसिंहजी ने अपनी सम्मान राशि ग्रामीण अंचल के गरीब एवं बीमार व्यक्तियों की चिकित्सा एवं अन्य सहायता हेतु सेवा संस्कार केन्द्र, इंदौर को समर्पित की। श्रीमती सुमन जैन ने अपनी राशि एवं स्वयं अपनी ओर से रुपयें 51,000.00 मिलाकर कुल 1,62,000.00 की राशि न्यास की गतिविधियों के संचालन हेतु एवं श्री सिद्धार्थ सेठी एवं श्री अविनाश सेठी ने भी अपनी सम्मान राशि न्यास को ही सधन्यवाद प्रत्यार्पित कर दी।

इस अवसर पर शिक्षा के क्षेत्र में उल्लेखनीय उपलब्धियाँ प्राप्त कर जैन समाज का गौरव बढ़ाने हेतु श्री एम. सी. सत्भैया एवं उनके परिवार को जैन परिवार गौरव की उपाधि से सम्मानित किया गया।

इसी अवसर पर ऋषभ जन्मभूमि–अयोध्या, महावीर जन्मभूमि–कुण्डलपुर, तीर्थंकरत्रय जन्मभूमि–हस्तिनापुर एवं अन्य तीर्थंकरों की जन्मभूमियों के जीर्णोद्धार, विकास तथा ऋषभगिरि–मांगीतुंगी (नासिक) में भगवान ऋषभदेव की विश्व की विशाल प्रतिमा के निर्माण हेतु स्वस्तिश्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामी जी को जैन धर्म गौरव की उपाधि से सम्मानित किया गया।

प्रशस्ति पत्रों का वाचन पं. जयसेन जैन, डॉ. संगीता विनायका, श्री अम्बुज जैन, डॉ. जैनेन्द्र जैन एवं श्री नीलेश जैन ने किया। इस अवसर पर शासकीय होलकर विज्ञान महाविद्यालय के प्रो. (डॉ.) संजय व्यास एवं श्री शोभित जैन, आई.ए.एस. सचिव स्कूल शिक्षा, मध्य प्रदेश ने छात्रों के कॅरियर मार्गदर्शन हेतु विशेष उद्बोधन दिये।

JEE Advance में उच्च अंक प्राप्त करने हेतु नगर की 3 उदीयमान प्रतिभाओं (श्री सम्यक् जैन, श्री वैदिक पापड़ीवाल एवं श्री अनिमेष जैन) का भी सम्मान किया गया।

भगवान गोम्मटेश्वर बाहुबली के महामस्तकाभिषेक–2018 के पुनीत अवसर पर आयोजित अखिल भारतीय जैन महिला सम्मेलन, विद्वत् सम्मेलन एवं राष्ट्रीय जैन युवा सम्मेलन में सक्रिय भूमिका निभाने हेतु डॉ. संगीता विनायका, श्रीमती ममता खासगीवाला, श्री सुरेन्द्र बाकलीवाल, श्री डी. के .जैन (स्कीम नं. 78), श्री वीरेन्द्र बड़जात्या एवं श्री दिलीप मेहता जी को सम्मानित किया गया।

न्यास के अध्यक्ष श्री नवीन जैन (गाजियाबाद) ने कहा कि अनुभव कभी किताबों से नहीं मिलता। अनुभव समाज में रहकर, अपनों के साथ रहकर ही सीखा जाता है। हमेशा अपनी सोच को सकारात्मक रखते हुए कार्य करें एवं सफलता प्राप्त करें। आप जमीन से आसमान को छूने की ताकत रखते हैं। हर व्यक्ति में कोई न कोई प्रतिभा होती है, आवश्यकता है उसे पहचानने एवं आगे बढ़ाने की। आज सम्मानित सभी विभूतियों का मैं स्वागत एवं अभिनंदन करता हूँ। 2019 में भी हम यह कार्यक्रम इसी प्रकार डॉत्र अनुपम जैन के निर्देशन में करते रहेंगे।

कुलपति डॉ. नरेन्द्र धाकड़ ने सदन में उपस्थित युवा बच्चों को संबोधित करते हुए कहा कि आप आज यहाँ सम्मानित विभूतियों से प्रेरणा लेकर आगे बढ़े एवं जैन समाज का ही नहीं अपितु संपूर्ण भारत का गौरव बढ़ायें।

शीतलतीर्थ की अधिष्ठात्री डॉ. सविता जैन ने कहा कि हम अपना लक्ष्य पहले निर्धारित करे और एकाग्रचित्त होकर उस लक्ष्य को प्राप्त करें, मायूस न हो, इरादे न बदले, मन, वचन, काय से उस लक्ष्य की प्राप्ति का प्रयास करें, सफलता अवश्य मिलेगी।

इस अवसर पर ज्ञानोदय फाउण्डेशन के निदेशक डॉ. सूरजमल बोबरा द्वारा जैन इतिहास से संबंधित प्रदर्शनी का आयोजन किया गया तथा इससे संबंधित एक पुस्तिका भारतीय इतिहास की अन्तर्कथा का निःशुल्क वितरण किया गया।

कार्यक्रम के अन्त में समाज के 15 बुजुर्ग, विधवा एवं निर्धन बच्चों को रुपये 21000.00 प्रत्येक की सहयोग राशि प्रदान की गई।

कार्यक्रम का सशक्त संचालन, डॉ. संगीता विनायका, श्री जैनेश झांझरी एवं डॉ. अनुपम जैन ने किया। कार्यक्रम में 1000 प्रबुद्ध गणमान्य व्यक्तियों की उपस्थिति उल्लेखनीय रही।

डॉ. अनुपम जैन
संस्थापक एवं मंत्री

श्रवणबेलगोला में श्रुत पंचमी मनाने की झलकियाँ

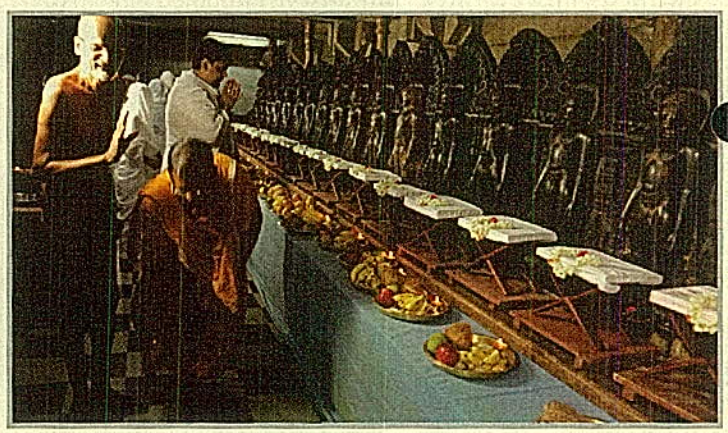

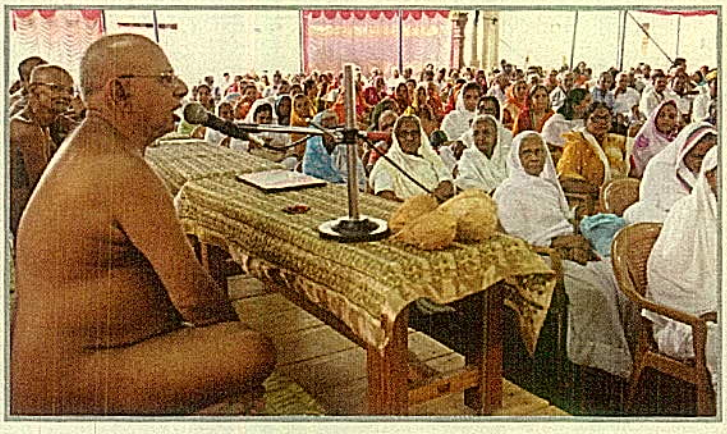

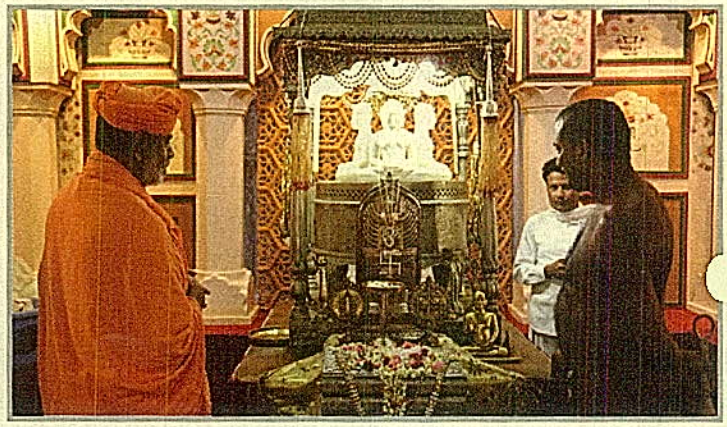

श्रवणबेलगोला में श्रुत पंचमी मनाने की झलकियाँ

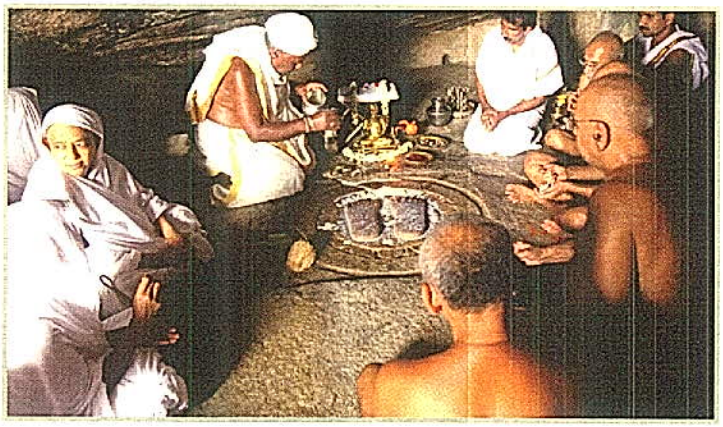

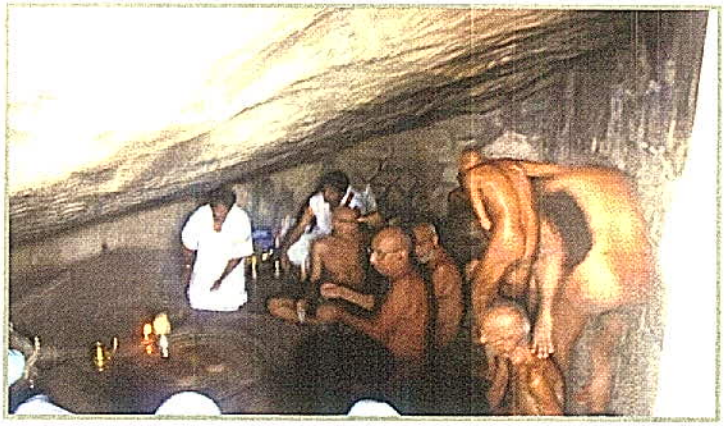

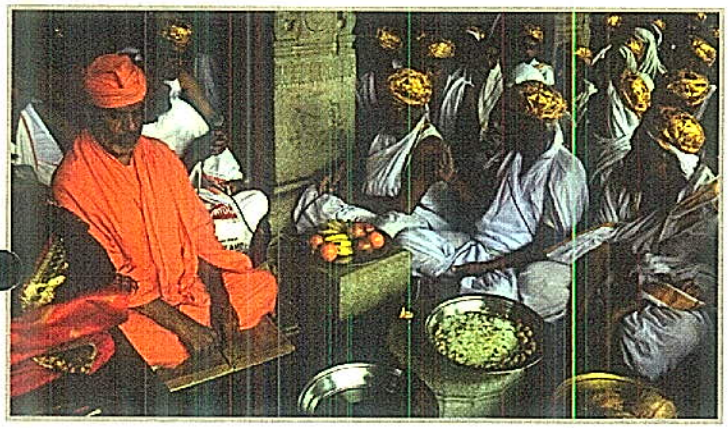

मूल्यों का करें पालन: देवनन्दी महाराज

चारित्र चक्रवर्ती आचार्य श्री शांतिसागरजी महाराज की जन्मजयंती पर हुआ आगमन

- पियुष कासलीवाल, औरंगाबाद

प्रज्ञाश्रमण देवनंदी महाराज ने छात्रों से आधुनिक शिक्षा लेने के साथ ही संस्कार और नैतिक मूल्यों का पालन करने की अपील की।

ज्ञात रहें कि पी.यू.जैन विद्यालय, औरंगाबाद में चारित्र चक्रवर्ती आचार्य श्री शांतिसागरजी महाराज की 145 वीं के जन्मजयंती के अवसर पर प्रज्ञाश्रमण देवनंदी महाराज ससंघ का आगमन हुआ है।

इस अवसर पर आचार्य देवनंदी महाराज ने प्रवचन में शांतिसागर महाराज के जीवन कार्यों की जानकारी दी। कहा कि केवल दूसरी कक्षा तक शिक्षा प्राप्त कर चुके 44 वर्षीय शांतिसागर महाराज ने पारिवारिक जीवन गुजारकर जैनेश्वरी दीक्षा ली। 36 आयु में 9938 दिन (24 वर्ष) उपवास किया। तपश्चर्या कर उन्होंने जैन धर्म प्रचार-प्रसार करते हुए शांति व भाईचारा से जीवन गुजारने का संदेश दिया।

इस अवसर पर छात्रों से महाराज ने कहा कि आधुनिक शिक्षा लें। संस्कारित व नैतिक मूल्यों का पालन करें। स्पर्धात्मक दौर में बने रहने के लिए पढ़ाई करते समय हमेशा आनंद व उत्साहित मन रखें। कार्यक्रम में संस्था के अध्यक्ष महावीर सेठी ने स्कूल और संचालित पाठ्यक्रमों की जानकारी दी। इस अवसर पर ललित पाटणी, विनोद लोहाड़े, विपीन कासलीवाल, मनोज

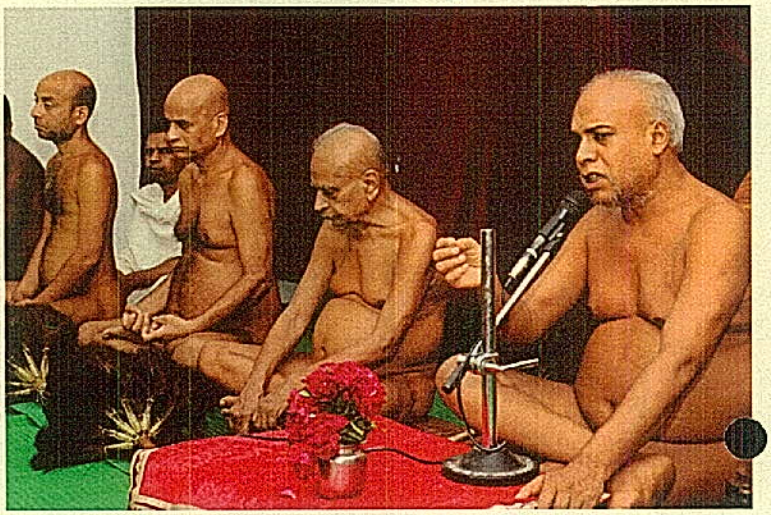

चांदीवाल, डॉ. रमेश बड़जाते, सुनील सेठी, पुष्पा बड़जाते, मुख्याध्यापिका कविता ठोले, विजय पाटोदी, नरेन्द्र अजमेरा, केतन ठोले समेत स्कूल स्टॉफ, अभिभावुक व विद्यार्थी उपस्थित थे। नीलेश छाबड़ा ने आचार्य देवनंदजी के जीवन कार्यों का परिचय करवाया।

वाराणसी के सुप्रसिद्ध श्री स्याद्वाद महाविद्यालय में अध्ययन का सुअवसर

- फूलचंद जैन (प्रेमी), वाराणसी

वाराणसी में पवित्र गंगा तट पर स्थित 113 वर्ष प्राचीन सुप्रसिद्ध श्री स्याद्वाद महाविद्यालय में शास्त्रीय एवं आधुनिक पद्धति से अध्ययन हेतु सत्र् 2018-2019 के लिए प्रवेश प्रारम्भ है। यहाँ पूर्वमध्यमा (हाईस्कूल) से लेकर शास्त्री (बी.ए.) एवं आचार्य (एम.एम) तथा अनुसन्धान शोध कार्य (पी.एच.डी.) तक के उच्च अद्ययन की अच्छी व्यवस्था है। अत: संस्कृत सहित कक्षा आठवीं, दसवीं, बारहवीं एम बी.ए. उत्तीर्ण जैन छात्र यहाँ प्रवेश लेकर छात्रावास, अध्ययन एवं भोजन की नि:शुल्क सुविधा का लाभ लेकर अपनी उच्च शिक्षा का स्वप्न पूर्ण कर सकते हैं। यहाँ रहकर जैनदर्शन, प्राकृत एवं जैनागम, संस्कृत साहित्य व्याकरण, ज्योतिष आदि विषयों के साथ ही संस्कृत प्राकृत, अंग्रेजी आदि विषयों का अध्ययन तथा कम्प्यूटर शिक्षा, प्रवचन-कला, विधि-विधान आदि विषयों के प्रशिक्षण की भी व्यवस्था है। जैन सैद्धान्तिक विषयों के लिए जैन परीक्षा बोर्ड से पाठ्यक्रम के अध्ययन की भी अनिवार्य व्यवस्था है।

ज्ञातव्य है कि गंगा तट पर सप्तम् तीर्थकर सुपार्श्वनाथ की जन्मस्थली पर पूज्य गणेश प्रसाद वर्णी जी द्वारा सन् 1905 में स्थापित तथा सम्पूर्णनन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी से प्रथम श्रेणी (क वर्ग) के रूप में सम्बद्ध देश का यह प्रथम जैन महाविद्यालय है, जिसने पिछले सौ से भी कुछ अधिक वर्षों में जैन विद्या, प्राकृत, संस्कृत एवं अपभ्रंश तथा साहित्य के श्रेष्ठ हजारों विद्वान् देश और समाज को देकर जैन धर्म-दर्शन, संस्कृति एवं साहित्य के विकास में महनीय योगदान प्रदान किया है। महाविद्यालय को अल्पसंख्यक शिक्षण संस्थान की मान्यता प्राप्त होने से अनेक सुविधायें भी उपलब्ध है।

शिक्षाजगत के सर्वश्रेष्ठ राष्ट्रपति पुरस्कार तथा स्वर्ण पदकों आदि अनेक सरकारी तथा समाजिक स्तर के उच्च पुरस्कारों से सम्मानित सर्वाधिक विद्वान इसी महाविद्यालय के स्नातक हैं। पिछले कई वर्षों से यहाँ का परीक्षाफल भी शत-प्रतिशत रहा है। ऐसे गौरवशाली महाविद्यालय में प्रवेश लेकर अध्ययन करना प्रत्येक विद्यार्थी का स्वप्न साकार करना होता है।

विद्यालय का नया सत्र 1 जुलाई 2018 से प्रारम्भ हो रहा है। प्रवेश के इच्छुक एवं योग्य छात्र पूर्ण विवरण के साथ निर्धारित आवेदन पत्र मंगवाकर अथवा सादे कागज पर आवेदन पत्र अधिष्ठाता/प्रबन्धक/मंत्री- श्री स्याद्वाद महाविद्यालय बी.3/80 भदैनी, पोस्ट-शिवाला, वाराणसी- उ.प्र.के पते पर भिजवा सकते हैं अथवा मोबाईल से बात कर सभी जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।

भारतगौरव अंतर्मना मुनिश्री प्रसन्नसागरजी गुरुदेव का भव्य मंगल प्रवेश

- प्रमोद कासलीवाल

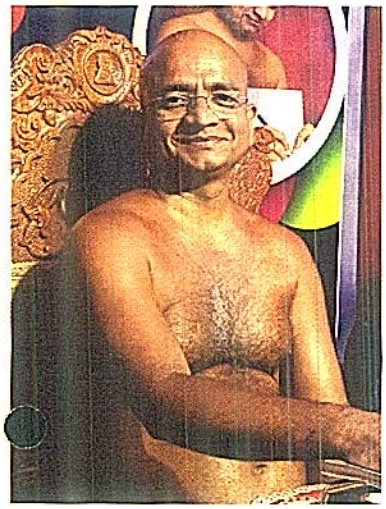

पुष्पगिरि तीर्थप्रणेता आचार्य पुष्पदंतसागरजी महाराज के उपवन के सुंगधित पुष्प अंतर्मना मुनिश्री भारतगौरव से अलंकृत मुनिश्री प्रसन्नसागरजी गुरुदेव एवं सौम्यमूर्ती मुनिश्री पियुषसागरजी गुरुदेव का भव्याति भव्य मंगल प्रवेश अहमदाबाद की पावन धरापर 10 जून 2018 को प्रात: 7.30 बजे हुआ। विसत पेट्रोलपंप पर सकल जैन समाज अहमदाबाद एवं अंतर्मना वर्षायोग समिति के समस्त पदाधिकारीगण एवं नगर के प्रथम नागरिक गौतमभाई शहा, आर.सी.गांधी, अभयकुमार जैन, सौभाग्यमल कटारिया, वृषभ जैन, नितीन जैन, अर्पित जैन, लोकेश कोडिया, प्रदीप कटारिया, बंटी जैन एवं अन्य गणमान्य नागरिकों ने अंतर्मना मुनिश्री प्रसन्नसागरजी गुरुदेव की अगवानी की। अंतर्मना मुनिश्री का सर्वप्रथम पादप्रक्षालन अंतर्मना वर्षायोग समिति व्दारा किया गया। तत्पश्चात उपस्थित जन समुदाय को अंतर्मना मुनिश्री प्रसन्नसागरजी गुरुदेव एवं पियुषसागरजी गुरुदेव के चरणों में विशालकाय श्रीफल अर्पित किया गया। कार्यकम स्थल से विशाल शोभायात्रा प्रारंभ हुई। इस शोभायात्रा मे हाथी, घोड़े, ऊंट, विंटेज कार, विभिन्न प्रकार के बॅण्ड, महिला मंडल, बालिका मण्डल ने अपनी प्रस्तुति की। पुष्पग्रुप द्वारा 40 बुलेट से गुरुदेव के चरणों में अलग तरीके से नमोस्तु निवेदित किया। नगर के विभिन्न मार्गो से होते हुए विशाल शोभायात्रा गाजबाजे के साथ कार्यक्रम स्थल पर पहुंची।

सर्वप्रथम अंतर्मना मुनिश्री को मंच पर विराजमान होने हेतु वर्षायोग समिति द्वारा श्रीफल चढ़ाकर निवेदन किया गया। तत्पश्चात तपस्वी सम्राट सन्मतिसागरजी महाराज एवं पुष्पदंतसागरजी महाराज के चित्रों का अनावरण प्रथम नागरिक गौतम शहा द्वारा किया गया। अंतर्मना मुनिश्री प्रसन्नसागरजी का पादप्रक्षालन गुरुभक्त अमित बड़जात्या, मुंबई मांगीलाल विनयकुमारजी नावडिया, उदयपुर द्वारा किया गया। छोटे छोटे बालिकाओं याशि और आशि कोडिया द्वारा नृत्य के माध्यम से मंगलाचरण प्रस्तुत किया। नितीनभाई पटेल नायब मुख्यमंत्री द्वारा गुरुदेव के चरणों में श्रीफल अर्पित किया गया। गुरुदेव के चरणों में आकर स्वयं को भाग्यशाली व पुण्यशाली माना। अंतर्मना वर्षायोग कलश लकी ड्रॉ के बुक का विमोचन गुरुदेव के आशीर्वाद से मोतीलाल एवं नरेशभाई ने किया। अंतर्मना वर्षायोग समिति ने सभी का आभार व्यक्त किया। अंतर्मना मुनिश्री प्रसन्नसागरजी द्वारा दिये जानेवाले तीन पुरस्कारों को प्रदान

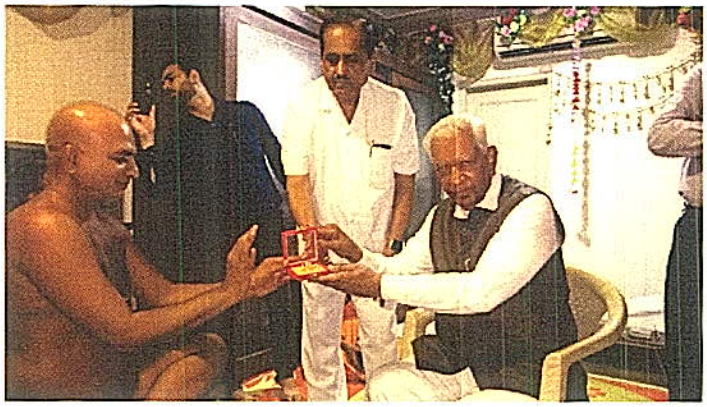

किया गया।

सर्वप्रथम पंडित रतनलाल शास्त्री, इंदौर को गणनी आर्यिका मॉ सुपार्श्वमती वैशिष्ठ पुरस्कार नितीनभाई पटेल द्वारा दिया गया, द्वितीय पुरस्कार पंडित श्री उदयचंदजी जैन उदयपुर को तपस्वी सम्राट सन्मतिसागरजी महाराज सेवा पुरस्कार श्री भारतवर्षीय दिगंबर जैन महिला समिति की अध्यक्षा सरिता जैन चेन्नई द्वारा प्रदान किया गया। तृतीय पुरस्कार बाल ब्र. लीलाबाई इंदौर को आर्यिका माँ पदमश्री करुणा पुरस्कार प्रदान किया गया। ततपश्चात् गुरुदेव का आशीर्वचन समस्त समाज को प्राप्त हुआ। पियुषसागरजी महाराज के निर्देशन में एवंम तरुणभैय्या इंदौर द्वारा लंदन में अंतर्मना मुनिश्री प्रसन्नसागरजी महाराज को भारतगौरव की उपाधि से सन्मानीत सर्टिफिकेट को श्री राजेश रावका, विनय सोगानी, राजीव जैन, सुनिल जैन एवं अंतर्मना वर्षायोग समिति द्वारा गुरुदेव को प्रदान किया गया।

अंतर्मना मुनिश्री प्रसन्नसागरजी महाराज ने धर्मसभा को संबोधित करते हुए कहा कि पिछले जन्म में पुण्य किया था सो आज मनुष्य जन्म मिला। उच्च कुल मिला, शोहरत मिली लेकिन आगे के लिए गलियों में आवारा जानवर घूम रहे हैं ना इन्हें भी कभी मनुष्य जन्म मिला था, मनुष्य जन्म पाकर इन्होंने सब किया पर धर्म नहीं किया परिणाम सामने है। मुनिश्री ने कहा कि पुण्य मंगल है अगर पुण्य है तो सब और मंगल ही मंगल है और पुण्य नहीं तो मंगलवार के दिन भी अमंगल है। पैसा प्रतिष्ठा और प्रशंसा ही मत कमाओ पुण्य भी कमाओ क्योंकि पैसा, प्रतिष्ठा प्रशंसा ये सभी पुण्य के अनुचर है पुण्य है तो पैसा है, पुण्य है तो प्रतिष्ठा है, पुण्य है प्रशंसा है, पुण्य नहीं तो कुछ भी नहीं और हाँ मत भूलो कि पुण्य का पन्ना पलटने में वक्त नहीं लगता। अंत वक्त के रहते पुण्य का संचय करलो ऐसा अंतर्मना मुनिश्री प्रसन्नसागरजी महाराज ने अपनी वाणी से कहा इस अवसर पर औरंगाबाद, मुबई, छतरपुर, राजस्थान- उदयपुर, छत्तीसगढ, इंदौर, लखनऊ, अहमदाबाद आदि जगहों से हजारों श्रद्धालु उपस्थित थे ऐसी जानकारी अंतर्मना मुनिश्री प्रसन्नासागरजी गुरुदेव के प्रचार प्रसार संयोजक पियुष कासलीवाल, नरेन्द्र अजमेरा, मनीष जैन ने दी।